Nekiyan Chhupao (Hindi)

DAWAT-E-ISLAMI

फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा (क़िस्त :16)

नेकियां छुपाओ

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल व जवाब)

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ के म-दनी मुज़ा-करे की रोशनी में मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा" की त़रफ़ से नए मवाद के काफ़ी इज़ाफ़े के साथ मुरत्तब किया गया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(اَلْمُستطرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नेकियां छुपाओ

येह रिसाला **(नेकियां छुपाओ)**

दा'वते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)" ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात MO. 9374031409
E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

अल्लाह रब्बुल आ़-लमीन ने इन्सानों और जिन्नों को अपनी क़ुदरते कामिला से पैदा फ़रमाया कि उस की बन्दगी करें, उन्हें अ़क़्लो शुऊ़र के ज़ेवर से नवाज़ा कि अच्छाई बुराई में तमीज़ करें और हर त़रह़ की ने'मतें अ़त़ा फ़रमाईं कि शुक्र गुज़ार बनें मगर शैत़ाने लईन इन्सान का खुला दुश्मन होने की वज्ह से इसी जुस्त-जू में रहता है कि येह अपने मा'बूदे ह़क़ीक़ी की बन्दगी से मुंह मोड़ कर उस की ना फ़रमानियों में मश्ग़ूल रहे। वोह अपने इस बुरे मक़्सद की ख़ात़िर अव्वलन तो लोगों को नेकी की त़रफ़ जाने नहीं देता और अगर कोई शैत़ान की चालों को नाकाम बनाते हुए नेक अ़मल करने में काम्याब हो भी जाए तो रियाकारी, तकब्बुर, हुब्बे जाह और ख़ुद नुमाई वग़ैरा में मुब्तला कर के उस के आ'माल बरबाद कर देता है और बन्दा अपने ज़ो'म में नेक आ'माल के सबब ख़ुश फ़ह्मी में मुब्तला रहता है मगर बरोज़े क़ियामत कफ़े अफ़्सोस मलता रह जाएगा कि नेकियों का अज्र तो दुन्या ही में ज़ाएअ़ कर चुका।

पेशे नज़र रिसाले "**नेकियां छुपाओ**" में इख़्लास का ज़ेह्न और अपनी नेकियां छुपाने की भरपूर तरग़ीब दिलाई गई है जिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा "फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा" पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है नीज़ इस रिसाले में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयान "नेकियां छुपाओ" को भी शामिल किया गया है। इसे निहायत तवज्जोह से पढ़िये और शैत़ान के मक्रो फ़रेब से बच कर इख़्लास के साथ नेक आ'माल बजा लाते हुए उख़्रवी नजात के लिये कोशिश कीजिये।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

22 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1437 सि.हि./30 मई 2016 सि.ई.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

नेकियां छुपाओ

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (102 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد एक दिन अपने त़-लबा को पढ़ा रहे थे कि एक शैख़ पुराने इ़मामे, पुरानी क़मीस और पुरानी चादर में मल्बूस तशरीफ़ लाए । ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْبَر उन की ता'ज़ीम लिये खड़े हो गए और उन्हें अपनी जगह पर बिठाया । फिर उन का और उन के बच्चों का ह़ाल दरयाफ़्त किया । उन्हों ने बताया कि आज रात मेरे घर बच्चा पैदा हुवा है । घर वालों ने मुझ से घी और शह्द मांगा है हालां कि मेरे पास एक ज़र्रा भी नहीं । ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْبَر फ़रमाते हैं : मैं (उन की येह बात सुन कर) परेशानी की ह़ालत में सो गया । मैं ने ख़्वाब में नबिय्ये करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم की ज़ियारत की । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ग़मगीन क्यूं हो ? ख़लीफ़ा के वज़ीर अ़ली बिन ईसा के पास जाओ और उसे जा कर मेरा सलाम कहना और येह निशानी बताना कि तुम जुमुआ़ की रात मुझ पर हज़ार मर्तबा दुरूद पढ़ने के बा'द सोते हो । इस जुमुआ़ की रात तुम ने मुझ पर सात

www.dawateislami.net

सो मर्तबा दुरूद पढ़ा था कि ख़लीफ़ा का क़ासिद आया और तुम्हें बुला कर ले गया। फिर वापस आ कर तुम ने मुझ पर दुरूद पढ़ा ह़त्ता कि तुम ने हज़ार मर्तबा दुरूद शरीफ़ मुकम्मल कर लिया। उसे कहना कि सो दीनार नौ मौलूद के वालिद को दे दो ताकि येह अपनी ज़रूरत पूरी करें। (ख़्वाब से बेदार होने के बा'द) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد उन को साथ ले कर वज़ीर के पास पहुंच गए। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने वज़ीर से कहा : इन को **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तेरी त़रफ़ भेजा है। वज़ीर खड़ा हुवा और आप (या'नी अबू बक्र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْبَر) को अपनी जगह पर बिठा कर सारा माजरा दरयाफ़्त किया। आप ने वज़ीर के सामने पूरा वाक़िआ़ बयान कर दिया। वज़ीर ख़ुश हुवा और अपने ग़ुलाम को माल की थैली निकालने का हुक्म दिया। फिर उस से सो दीनार निकाल कर नौ मौलूद के वालिद को दे दिये। इस के बा'द सो दीनार और निकाले ताकि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْبَر को दे मगर आप ने लेने से इन्कार कर दिया। वज़ीर ने कहा : ह़ज़रत ! इस सच्ची ख़बर की बिशारत देने पर आप मुझ से येह नज़राना ले लें। येह मुआ़-मला मेरे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान एक राज़ था और आप **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ासिद हैं। फिर वज़ीर ने मज़ीद सो दीनार निकाले और आप से कहा : येह इस बिशारत या'नी ख़ुश ख़बरी के सबब ले लीजिये कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मेरे हर जुमुआ़ की रात के दुरूद का इ़ल्म है। फिर उस ने सो दीनार और निकाले और कहा : येह आप की उस थकावट के बदले में हैं जो आप को हमारी त़रफ़ आते हुए बरदाश्त करना पड़ी। फिर वज़ीर साह़िब यके बा'द

www.dawateislami.net

दीगरे (नौ मौलूद के वालिद के लिये) सो सो दीनार निकालते रहे ह़त्ता कि हज़ार दीनार निकाल लिये मगर उस ने कहा : मैं सिर्फ़ उतने लूंगा जिन का मुझे **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया है ।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि हमारे प्यारे सरकार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से अपने गुलामों के ज़ाहिरी और पोशीदा आ'माल से ख़बरदार हैं । तभी तो ख़लीफ़ा के वज़ीर अ़ली बिन ईसा के "**पोशीदा अ़मल**" के बारे में ग़ैब की ख़बर देते हुए इर्शाद फ़रमाया कि "**उसे जा कर मेरा सलाम कहना और येह निशानी बताना कि तुम जुमुआ़ की रात मुझ पर हज़ार मर्तबा दुरूद पढ़ने के बा'द सोते हो । इस जुमुआ़ की रात तुम ने मुझ पर सात सो मर्तबा दुरूद पढ़ा था कि ख़लीफ़ा का क़ासिद आया और तुम्हें बुला कर ले गया । फिर वापस आ कर तुम ने मुझ पर दुरूद पढ़ा ह़त्ता कि तुम ने हज़ार मर्तबा दुरूद शरीफ़ मुकम्मल कर लिया ।**" येह भी मा'लूम हुवा कि हमारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने गुलामों के साथ पेश आने वाली मुश्किलात को ब अ़त़ाए इलाही जानते और उन्हें दूर भी फ़रमाते हैं जैसा कि उस नौ मौलूद के वालिद की परेशानी जान कर दूर फ़रमा दी । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن क्या ख़ूब इर्शाद फ़रमाते हैं :

1 ...... القولُ البدیع، الباب الرابع فی تبلیغہ...الخ، ص ۳۲۷-۳۲۸

www.dawateislami.net

फ़रियाद उम्मती जो करे ह़ाले ज़ार में
मुम्किन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो
वल्लाह वोह सुन लेंगे फ़रियाद को पहुंचेंगे
इतना भी तो हो कोई जो आह करे दिल से (ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेक आ'माल में रिज़ाए इलाही की निय्यत

अ़र्ज़ : आ'माले सालिह़ा बजा लाने में क्या निय्यत होनी चाहिये ?

इर्शाद : जो भी नेक अ़मल किया जाए फ़क़त़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और ख़ुशनूदी ह़ासिल करने की निय्यत से किया जाए। अगर कोई शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के बजाए किसी और को दिखाने, दूसरों से दाद व सिताइश पाने या अपना नाम चमकाने की निय्यत से कोई अ़मल करेगा तो ऐसा शख़्स सवाब से मह़रूम हो कर रियाकारी की तबाहकारी में मुब्तला हो जाएगा लिहाज़ा जो भी नेक अ़मल किया जाए मह़ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किया जाए उस में किसी को शरीक न किया जाए। पारह 16 **सू-रतुल कह्फ़** की आयत नम्बर 110 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا ﴿۱۱۰﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो, उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी भी अ़मल की मक़्बूलिय्यत और उस पर सवाबे आख़िरत मिलने के लिये उस का रिज़ाए इलाही के लिये होना इन्तिहाई ज़रूरी है। अगर निय्यत अच्छी हुई और किसी वज्ह से अ़मल सह़ीह़ न भी हो सका तब भी इस पर सवाब मिलने की उम्मीद है और अगर अ़मल अच्छा हुवा लेकिन निय्यत सह़ीह़ न हुई तो इस सूरत में सवाब से मह़रूमी है जैसा कि सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : इ़बादत कोई भी हो उस में इख़्लास निहायत ज़रूरी चीज़ है या'नी मह़ज़ रिज़ाए इलाही के लिए अ़मल करना ज़रूरी है। दिखावे के तौ़र पर अ़मल करना बिल इज्माअ़ ह़राम है बल्कि ह़दीस में रिया को शिर्केअसग़र फ़रमाया।[1] इख़्लास ही वोह चीज़ है कि इस पर सवाब मुरत्तब होता है। हो सकता है कि अ़मल सह़ीह़ न हो मगर जब इख़्लास के साथ किया गया हो तो उस पर सवाब मुरत्तब हो म-सलन ला इ़ल्मी में किसी ने नजिस पानी से वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ ली अगर्चे येह नमाज़ सह़ीह़ न हुई कि सिह़्ह़त की शर्त़ त़हारत थी वोह नहीं पाई गई मगर इस ने सिद्क़े निय्यत और इख़्लास के साथ पढ़ी है तो सवाब का तरत्तुब है या'नी इस नमाज़ पर सवाब पाएगा मगर जब कि

1.... ह़दीसे पाक में है : जिस चीज़ का तुम पर ज़ियादा ख़ौफ़ है, वोह शिर्के असग़र है। लोगों ने अ़र्ज़ की : शिर्के असग़र क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : रिया।
(مسند امام احمد، حدیث محمود بن لبید، ۹/۱۶۰، حدیث: ۲۳۶۹۲)

www.dawateislami.net

बा'द में मा'लूम हो गया कि नापाक पानी से वुज़ू किया गया था तो वोह मुत़ा-लबा (शरीअ़त का हुक्म) जो इस के ज़िम्मे है साक़ित़ न होगा, वोह ब दस्तूर क़ाइम रहेगा इस को अदा करना होगा और कभी शराइते़ सिह़ह़त पाए जाएंगे मगर सवाब न मिलेगा म-सलन नमाज़ पढ़ी, तमाम अरकान अदा किये और शराइत़ भी पाए गए मगर रिया के साथ पढ़ी तो अगर्चे इस नमाज़ की सिह़ह़त का हुक्म दिया जाए मगर चूं कि इख़्लास नहीं है सवाब नहीं ।[1] **याद रखिये ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और ख़ुशनूदी ह़ासिल करने की निय्यत नेक व जाइज़ और मुबाह़ कामों में ही हो सकती है गुनाह वाला काम अच्छी निय्यत और ख़ुलूस से नेकी नहीं बन जाता बल्कि उस की हलाकत ख़ैज़ियों में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाता है और येह भी याद रखिये कि जिस त़रह़ नेक अ़मल से पहले दिल में इख़्लास होना और उस का रिज़ाए इलाही के लिये होना ज़रूरी है इसी त़रह़ हर नेकी व इ़बादत के दौरान इसे क़ाइम रखना (या'नी रियाकारी न आने देना) भी ज़रूरी है क्यूं कि शैत़ान मुसल्सल दिल में वस्वसे डालने की कोशिश में लगा रहता है । ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : जो शख़्स अपने आ'माल में साह़िर (या'नी जादूगर) से ज़ियादा होशियार न होगा वोह (शैत़ान के झांसे में आ कर) रियाकारी में फंस जाएगा ।[2]

1.... बहारे शरीअ़त, 3/636-637, ह़िस्सा : 16

2.... تَنبِیهُ الْمُغْتَرِّیْن، ص ٢٣

www.dawateislami.net

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते़ हो

कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

नेकियां छुपाने के बारे में आयते करीमा

अ़र्ज़ : क्या क़ुरआने करीम में इ़बादात को पोशीदा त़ौर पर बजा लाने के बारे में भी तरग़ीब मौजूद है ?

इर्शाद : जी हां ! क़ुरआने मजीद में दोनों त़रह़ की इजाज़त मौजूद है या'नी अ़लानिया इ़बादत की भी और पोशीदा की भी जैसे स-दक़ा व ख़ैरात करना येह माली इ़बादत है इस के बारे में पारह 3 **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर 271 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِیَ ۚ وَ اِنْ تُخْفُوْهَا وَ تُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ ؕ وَ یُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَیِّاٰتِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ ﴿۲۷۱﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर ख़ैरात अ़लानिया दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है और इस में तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे और **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

इस आयते करीमा में स-दक़ा व ख़ैरात करने की तरग़ीब है, चाहे वोह स-दक़ा व ख़ैरात अ़लानिया हो या पोशीदा दोनों त़रह़ कर सकते हैं लेकिन पोशीदा स-दक़ा व ख़ैरात के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया : **''और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो येह**

www.dawateislami.net

तुम्हारे लिये सब से बेहतर है ।" इसी त़रह़ पारह 3 **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर 274 में इर्शाद होता है :

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۷۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे और ज़ाहिर उन के लिये उन का नेग (अज्र) है उन के रब के पास उन को न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म ।

इस आयते मुबा-रका के तह़त ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन अ़ली बिन मुह़म्मद बग़दादी عَلَيْهِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی **तफ़्सीरे ख़ाज़िन** में फ़रमाते हैं : इस आयते करीमा में इस त़रफ़ इसारा है कि छुपा कर स-दक़ा देना अ़लानिया देने से अफ़्ज़ल है इस लिये कि **अल्लाह** तआ़ला ने नफ़्क़ए लैल (रात में ख़र्च करने) को नफ़्क़ए नहार (दिन में ख़र्च करने) पर और नफ़्क़ए सिर्र (पोशीदा ख़र्च करने) को नफ़्क़ए अ़लानिया (ज़ाहिर कर के ख़र्च करने) पर मुक़द्दम फ़रमाया है ।[1]

इसी त़रह़ दुआ़ करना इ़बादत बल्कि इ़बादत का भी मग़ज़ है चुनान्चे ह़दीसे पाक में है : اَلدُّعَآءُ مُخُّ الْعِبَادَۃِ या'नी दुआ़ इ़बादत का मग़ज़ है ।[2] इस के बारे में भी एक हुक्म येह है कि येह मख़्फ़ी (छुप कर) हो चुनान्चे पारह 8 **सू-रतुल आ'राफ़** की आयत नम्बर 55 में इर्शाद होता है :

1 ...... تفسیرِ خازن، پ۳، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۷۴، ۱/ ۲۱۴

2 ...... ترمذی، کتاب الدعوات، باب ما جاء فی فضل الدعاء، ۵/ ۲۴۳، حدیث: ۳۳۸۲

www.dawateislami.net

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّ خُفْيَةً ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۵۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब से दुआ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक ह़द से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं ।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : दुआ **अल्लाह** तआ़ला से ख़ैर त़लब करने को कहते हैं और येह दाख़िले इ़बादत है क्यूं कि दुआ करने वाला अपने आप को आ़जिज़ो मोह़ताज और अपने परवर दगार को ह़क़ीक़ी क़ादिर व ह़ाजत रवा ए'तिक़ाद करता है। इसी लिये ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा "اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ" (या'नी दुआ इ़बादत का मग़्ज़ है ।) तज़र्रोअ़ से इज़्हारे इज़्ज़ो ख़ुशूअ़ मुराद है और अ-दबे दुआ में येह है कि आहिस्ता हो । ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि आहिस्ता दुआ करना अ़लानिया दुआ करने से सत्तर द-रजा ज़ियादा अफ़्ज़ल है । मस्अला : इस में उ़-लमा का इख़्तिलाफ़ है कि इ़बादात में इज़्हार अफ़्ज़ल है या इख़्फ़ा, बा'ज़ कहते हैं कि इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है क्यूं कि वोह रिया से बहुत दूर है, बा'ज़ कहतें हैं कि इज़्हार अफ़्ज़ल है इस लिये कि इस से दूसरों को रग़बते इ़बादत पैदा होती है । तिरमिज़ी ने कहा कि अगर आदमी अपने नफ़्स पर रिया का अन्देशा रखता हो तो उस के लिये इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है और अगर क़ल्ब साफ़ हो अन्देशए रिया न हो तो इज़्हार अफ़्ज़ल है। बा'ज़ ह़ज़रात येह फ़रमाते हैं कि फ़र्ज़ इ़बादतों में इज़्हार अफ़्ज़ल है,

www.dawateislami.net

नमाज़े फ़र्ज़ मस्जिद ही में बेहतर है और ज़कात का इज़्हार कर के देना ही अफ़्ज़ल है और नफ़्ल इबादात में ख़्वाह वोह नमाज़ हो या स-दक़ा वग़ैरा इन में इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है। दुआ में ह़द से बढ़ना कई त़रह़ से होता है इस में से एक येह भी है कि बहुत बुलन्द आवाज़ से चीख़े।[1]

नेकियां छुपाने के बारे में अह़ादीसे मुबा-रका

अ़र्ज़ : क्या अह़ादीसे मुबा-रका में भी नेकियां छुपाने की तरग़ीब दिलाई गई है ?

इर्शाद : जी हां ! अह़ादीसे मुबा-रका में भी नेकियां छुपाने की तरग़ीब है और मज़ीद पोशीदा इ़बादत के फ़ज़ाइल भी बयान फ़रमाए गए हैं चुनान्चे ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : तुम में से जो कोई नेक आ'माल पोशीदा रखने की इस्तित़ाअ़त रखता हो तो उसे चाहिये कि वोह ऐसा ही करे (या'नी अपने नेक आ'माल को पोशीदा रखे)[2]

सुल्त़ाने इन्सो जान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : वोह ज़िक्र जिस को निगहबान फ़िरिश्ते भी न सुन सकें, उस ज़िक्र पर जिसे वोह सुन सकें सत्तर द-रजा ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है।[3] एक और ह़दीसे पाक में इर्शाद फ़रमाया : ज़ाहिर अ़मल के मुक़ाबले में पोशीदा अ़मल

1... ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 8, अल आ'राफ़, तह़तल आयह : 55

2 ...جامع صغیر، حرف المیم، ص ۵۱۲، حدیث: ۸۴۰۵

3 ...کنز العُمّال، من حرف الھمزۃ فی الاذکار...الخ، الباب الاوّل فی الذکر وفضیلتہ، الجزء:۱، ۱/۲۲۷، حدیث: ۱۹۲۵

www.dawateislami.net

अफ़्ज़ल है ।[1]

सब से ज़ियादा त़ाक़त वर चीज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन को पैदा फ़रमाया तो वोह कांपने लगी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पहाड़ों को पैदा फ़रमा कर उन्हें ज़मीन में गाड़ दिया तो वोह साकिन हो गई । येह देख कर फ़िरिश्तों को पहाड़ों की त़ाक़त पर तअ़ज्जुब हुवा और उन्हों ने अ़र्ज़ की : ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! क्या तू ने पहाड़ों से ज़ियादा त़ाक़त वर कोई चीज़ पैदा फ़रमाई है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : हां ! वोह लोहा है । फिर फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की : क्या लोहे से त़ाक़त वर चीज़ भी पैदा फ़रमाई है ? फ़रमाया : हां ! वोह आग है । फिर फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की : आग से भी त़ाक़त वर चीज़ पैदा फ़रमाई है ? फ़रमाया : हां ! वोह पानी है ? फिर फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की : क्या पानी से त़ाक़त वर चीज़ भी पैदा फ़रमाई है ? फ़रमाया : हां ! वोह हवा है । फ़िरिश्तों ने फिर अ़र्ज़ की : क्या हवा से त़ाक़त वर चीज़ भी पैदा फ़रमाई है ? फ़रमाया : हां ! इब्ने आदम ! जब अपने दाएं हाथ से स-दक़ा दे और बाएं हाथ को ख़बर न हो ।[2]

नेकियां छुपाने के ह़वाले से अस्लाफ़ के वाक़िआ़त

अ़र्ज़ : अपनी नेकियों को छुपाने के सिल्सिले में सह़ाबए किराम व बुज़ुर्गाने दीन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के कुछ वाक़िआ़त भी

---

1 ..... شُعَبُ الْاِیمان، باب فی السرور بالحسنة والاغتمام بالسیئة، ۵/۳۷۶، حدیث: ۷۰۱۲

2 ..... شُعَبُ الْاِیمان، باب فی الزکوة، فصل فی الاختیار فی صدقة التطوع، ۳/۲۴۴، حدیث: ۳۴۴۱

www.dawateislami.net

बयान फ़रमा दीजिये ।

इर्शाद : सह़ाबए किराम व बुज़ुर्गाने दीन رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن इल्मो अ़मल और इख़्लास के पैकर होते, जो भी काम करते फ़क़त़ रिज़ाए इलाही के ह़ुसूल के लिये करते और इस बात की क़त़्अ़न परवाह या त़मअ़ न करते कि लोग उन के अ़मल पर मुत्त़लअ़ हो कर उन की ता'रीफ़ करें । इस ज़िम्न में अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पोशीदा अ़मल का जज़्बा मुला-ह़ज़ा कीजिये चुनान्चे

सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पोशीदा अ़मल

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रात के वक़्त मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا के किसी मह़ल्ले में रहने वाली एक नाबीना बूढ़ी औ़रत के घरेलू कामकाज कर दिया करते थे, आप उस के लिये पानी भर कर लाते और उस के तमाम काम सर अन्जाम देते । ह़स्बे मा'मूल एक मर्तबा बुढ़िया के घर आए तो येह देख कर ह़ैरान रह गए कि सारे काम उन से पहले ही कोई कर गया था । बहरह़ाल दूसरे दीन थोड़ा जल्दी आए तो भी वोही सूरते ह़ाल थी कि सब काम पहले ही हो चुके थे । जब दो तीन दिन ऐसा हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बहुत तश्वीश हुई कि ऐसा कौन है जो मुझ से नेकियों में सब्क़त ले जाता है ? एक दिन आप दिन ही में आ कर कहीं छुप गए जब रात हुई तो देखा कि ख़लीफ़ए

www.dawateislami.net

वक़्त अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए और उस नाबीना बुढ़िया के सारे काम कर दिये। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बड़े हैरान हुए कि ख़लीफ़ए वक़्त होने के बा वुजूद ऐसी इन्किसारी ! इर्शाद फ़रमाया : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही तो हैं जो मुझ से नेकियों में सब्क़त ले जाते हैं।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बा वुजूद ख़लीफ़ए वक़्त होने के उस नाबीना बुढ़िया के घर के कामकाज ख़ुद अपने मुबारक हाथों से सर अन्जाम देते और येह भी मा'लूम हुवा कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़त्अ़न इस बात को पसन्द न फ़रमाते कि कोई दूसरा उन के अ़मल से बा ख़बर हो कर उन की ता'रीफ़ करे, जभी तो रात के अंधेरे में पोशीदा त़ौर पर उस बुढ़िया के घर का कामकाज कर दिया करते थे। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की त़रह़ हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن भी अपने आ'माल को पोशीदा रखते। अगर किसी के साथ एह़सान व भलाई करते तो लोगों के सामने ज़ाहिर न फ़रमाते यहां तक कि जिस के साथ एह़सान व भलाई करते ख़ुद उसे भी मा'लूम न होता कि येह काम किस ने किया है चुनान्चे

مدینہ

1 ..... کنزُالعمّال، کتاب الفضائل، باب فضائل الصحابۃ، فضل الصدیق...الخ، الجزء: ۱۲، ۲۲۱/۶، حدیث: ۳۵۶۰۲

www.dawateislami.net

जब तक ज़िन्दा रहे नेक अ़मल पोशीदा रहा

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق (रूमियों के मुक़ाबले में जिहाद के लिये) त़रसूस जाते हुए शहरे रक़्क़ा के एक मुसाफ़िर ख़ाने में क़ियाम फ़रमाते तो एक नौ जवान आता, आप की ज़रूरिय्यात पूरी करता और कुछ अह़ादीस की समाअ़त कर लेता था। एक मर्तबा जब आप वहां पहुंचे तो वोह नौ जवान मिलने नहीं आया। आप जल्दी में थे तो लश्कर के साथ चले गए जब जंग से फ़ारिग़ हो कर वापस रक़्क़ा पहुंचे तो लोगों से उस नौ जवान का ह़ाल दरयाफ़्त किया तो लोगों ने बताया कि किसी का उस पर क़र्ज़ चढ़ गया था, क़र्ज़ ख़्वाह ने उसे जेल में डलवा दिया है। पूछा : उस पर कितना क़र्ज़ है ? लोगों ने जवाब दिया : दस हज़ार दिरहम। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रात में क़र्ज़ ख़्वाह को अपने पास बुलवाया और उसे दस हज़ार दिरहम दे कर क़सम दी कि जब तक **अ़ब्दुल्लाह** ज़िन्दा है तुम इस के बारे में किसी को नहीं बताओगे और कहा कि सुब्ह़ तुम उस नौ जवान को क़ैद से आज़ाद करवा देना। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस के बा'द वहां से रवाना हो गए। नौ जवान क़ैद से आज़ाद हो कर जब शह्र आया तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की आमद की इत्तिलाअ़ मिली और मा'लूम हुवा कि कल यहां से रवाना हो गए हैं। येह नौ जवान उसी वक़्त पीछे रवाना हुवा और चन्द मन्ज़िल बा'द मुलाक़ात हो गई, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रामाया : कहां थे ? मैं ने तुम्हें मुसाफ़िर ख़ाने में नहीं देखा।

www.dawateislami.net

अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! क़र्ज़ के सबब क़ैदख़ाने में था। फ़रमाया : फिर तुम्हें आज़ादी कैसे मिली ? अ़र्ज़ की : मुझे मा'लूम नहीं, किसी ने मेरा क़र्ज़ अदा कर दिया जिस की वज्ह से मुझे रिहाई मिल गई। फ़रमाया : ऐ नौ जवान ! ख़ुदा का शुक्र अदा करो, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने किसी को तेरा क़र्ज़ अदा करने की तौफ़ीक़ दे दी होगी। उस नौ जवान को इस हुस्ने सुलूक का पता उस वक़्त चला जब आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का विसाल हो चुका था।[1]

बन्द कमरे में छुप कर इ़बादत

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन क़ासिम رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं बीस बरस से ज़ियादा अ़र्सा ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन मुह़म्मद बिन अस्लम तूसी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی की सोह़बत में रहा मगर जुमु-अ़तुल मुबारक के इ़लावा कभी आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ते भी न देख सका। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ रियाकारी के ख़ौफ़ से एक बार फ़रमाने लगे : अगर मेरा बस चले तो मैं किरामन कातिबीन (या'नी आ'माल लिखने वाले दोनों बुज़ुर्ग फ़िरिश्तों) से भी छुप कर इ़बादत करूं ! आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ पानी का कूज़ा ले कर अपने कमरए ख़ास में तशरीफ़ ले जाते और अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लेते थे। मैं कभी भी न जान सका कि आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ कमरे में क्या करते हैं, यहां तक कि एक दिन आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ

مدینہ

1 ...... تاریخِ بغداد، ذکر من اسمہ عبد اللّٰہ واسم ابیہ المبارک، ۱۰/۱۵۸ ملخصاً

www.dawateislami.net

का म-दनी मुन्ना ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। उस की अम्मीजान चुप करवाने की कोशिश कर रही थीं, मैं ने कहा : म-दनी मुन्ना आख़िर इस क़दर क्यूं रो रहा है ? बीबी साहिबा ने फ़रमाया : इस के अब्बू (ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन तूसी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی) इस कमरे में दाख़िल हो कर तिलावते क़ुरआन करते हैं और रोते हैं तो येह भी उन की आवाज़ सुन कर रोने लगता है। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस कम्रए ख़ास से इबादत करने के बा'द बाहर निकलने से पहले अपना मुंह धो कर आंखों में सुरमा लगा लेते ताकि चेहरा और आंखें देख कर किसी को अन्दाज़ा न होने पाए कि येह रोए थे ![1]

अ़ता कर दे इख़्लास की मुझ को ने'मत
न नज़्दीक आए रिया या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

''नेकी कर दरिया में डाल'' का मत़लब

अ़र्ज़ : ''नेकी कर दरिया में डाल'' इस का क्या मत़लब है ? नीज़ नेकी कर के जतलाना और शुक्रिय्या का त़ालिब होना कैसा है ?

इर्शाद : ''नेकी कर दरिया में डाल'' येह एक मुह़ा-वरा है जिस का मत़लब येह है कि किसी के साथ नेकी या एह़सान कर के भूल जाना और उस से अच्छा बदला मिलने की उम्मीद न रखना। होना भी ऐसा ही चाहिये कि अगर कोई शख़्स किसी के साथ

مدینہ

1 ..... حِلیۃُ الاولیاء، محمد بن اَسلم، ۹/۲۵۴ ملتقطاً

www.dawateislami.net

नेकी करे तो नेकी कर के भूल जाए। एह़सान जतलाने, शुक्रिय्या अदा करने का त़ालिब होने और उस से अच्छा बदला मिलने की क़त़्अ़न उम्मीद न रखे। ऐसे लोगों के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अज्रो सवाब का वा'दा फ़रमाया है चुनान्चे पारह 3 **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर 262 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا یُتْبِعُوْنَ مَاۤ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّ لَاۤ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۲۶۲﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अपने माल **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं फिर दिये पीछे न एह़सान रखें न तक्लीफ़ दें उन का नेग (अज्रो सवाब) उन के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।

अगर कोई किसी के साथ नेकी करे फिर एह़सान जताए, दूसरों के सामने इस का इज़्हार करे कि हम ने तेरे साथ ऐसे ऐसे सुलूक किये और उस को आ़र दिलाए कि "तू मोह़ताज व नादार था, मुफ़्लिस व लाचार था, हम ने तेरे साथ क्या क्या भलाई की, आज तू हमें येह सिला देता है, हमें पूछता ही नहीं, हमें सलाम करना गवारा नहीं करता, हमारे एह़सान को भूल गया है, नमक ह़राम, एह़सान फ़रामोश" वग़ैरा वग़ैरा या और किसी त़रह़ दबाव डाले तो ऐसा करने से नेकी का अज्र ज़ाएअ़ हो जाता है और क़ुरआने करीम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस की मुमा-न-अ़त फ़रमाई है चुनान्चे पारह 3 **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर

www.dawateislami.net

264 में इर्शादे रब्बुल इबाद है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تُبۡطِلُوۡا صَدَقٰتِكُمۡ بِالۡمَنِّ وَالۡاَذٰىۙ كَالَّذِىۡ يُنۡفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤۡمِنُ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ‌ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपने स-दक़े बातिल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर उस की त़रह़ जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करे और **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान न लाए।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त ह़ज़रते अ़ल्लामा **अ़ब्दुल्लाह** बिन अह़मद बिन मह़मूद नस्फ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : या'नी जिस त़रह़ मुनाफ़िक़ को अपने माल ख़र्च करने से रिज़ाए रब्बुल इ़ज़्ज़त और सवाबे आख़िरत मक़्सूद नहीं होता वोह अपना माल लोगों को दिखाने के लिये ख़र्च कर के ज़ाएअ़ कर देता है ऐसे ही तुम एह़सान जता कर और ईज़ा दे कर अपने स-दक़ात का सवाब ज़ाएअ़ न करो।[1]

नेकियां छुपाने का मक़्सद

अ़र्ज़ : अपनी नेकियां पोशीदा रखने का क्या मक़्सद है ?

इर्शाद : नेकियां छुपाने का मक़्सद उन को ज़ाएअ़ होने से बचाना है क्यूं कि नफ़्सो शैत़ान इन्सान के खुले दुश्मन हैं जो इन्सान को नेकियां करने नहीं देते और अगर हिम्मत कर के कोई नेकी कर भी ली तो येह पोशीदा नहीं रहने देते। शैत़ान के बहकावे में आ

1 ...... تفسیرِ نسفی، پ۳، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۶۴، ص ۱۳۷

www.dawateislami.net

कर इन्सान के दिल में अपनी नेकियों के इज़्हार की ख़्वाहिश पैदा होती है तो वोह लोगों को अपने नेक आ'माल बता कर, नेकनामी की दाद पा कर तकब्बुर, हुब्बे जाह और रियाकारी की तबाहकारी में जा गिरता है। इस लिये जब भी कोई नेक अ़मल करने की सआ़दत नसीब हो तो उस नेक अ़मल को कर लेने के बा'द पोशीदा रखने ही में आ़फ़िय्यत है कि दिखावे वग़ैरा की नुहूसत से नेकियां बरबाद हो जाती हैं। इस लिहाज़ से अपने नेक आ'माल को पोशीदा रखना आ'माल बजा लाने से ज़ियादा मुश्किल है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : बेशक अ़मल कर के उसे रियाकारी से बचाना अ़मल करने से ज़ियादा मुश्किल है और आदमी कोई अ़मल करता है तो उस के लिये ऐसा नेक अ़मल लिख दिया जाता है जो तन्हाई में किया गया होता है और उस के लिये सत्तर गुना सवाब बढ़ा दिया जाता है। फिर शैत़ान उस के साथ लगा रहता है (और उसे उक्साता रहता है) यहां तक कि आदमी उस अ़मल का लोगों के सामने ज़िक्र कर के उसे ज़ाहिर कर देता है तो अब उस के लिये येह अ़मल (मख़्फ़ी के बजाए) अ़लानिया लिख दिया जाता है और अज्र में सत्तर गुना इज़ाफ़ा मिटा दिया जाता है। शैत़ान फिर उस के साथ लगा रहता है यहां तक कि वोह दूसरी मर्तबा लोगों के सामने उस अ़मल का ज़िक्र करता है और चाहता है कि लोग भी उस का तज़्किरा करें और इस अ़मल पर उस की ता'रीफ़ की जाए तो उसे अ़लानिया से भी मिटा कर रियाकारी में लिख दिया जाता है। पस

www.dawateislami.net

बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरे, अपने दीन की हिफ़ाज़त करे और बेशक रियाकारी शिर्क (असग़र) है।[1]

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जब रिया व इख़्लास में से हर एक में शैतानी चालें और धोके बाज़ियां हैं तो तुझे बेदार रहना लाज़िम है। पस ! अगर तुझे पता न चले कि तू मुख़्लिस है या रियाकार तो फिर तुझे अपने नेक आ'माल छुपाना ही बेहतर है कि इस में तेरे लिये किसी क़िस्म का नुक़्सान नहीं।[2]

बना दे मुझ को इलाही ख़ुलूस का पैकर
क़रीब आए न मेरे रिया या रब

(वसाइले बख़्शिश)

अ़लानिया इ़बादत अफ़्ज़ल है या पोशीदा ?

अ़र्ज़ : अ़लानिया इ़बादत अफ़्ज़ल है या पोशीदा ? नीज़ अफ़्ज़ल होने की वज्ह क्या है ?

इर्शाद : इ़बादात में अ़लानिया या पोशीदा के अफ़्ज़ल होने के ए'तिबार से मु-तअ़द्दिद सूरतें हैं जिन का दारो मदार निय्यत पर है। हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन अ़ली बिन मुहम्मद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : इस में उ़-लमा का इख़्तिलाफ़ है कि इ़बादत में इज़्हार अफ़्ज़ल है या इख़्फ़ा। बा'ज़ कहते हैं कि

مدینہ

1 ...... الترغیب والترھیب، المقدمة، الترھیب من الریاء...الخ، ۱/۴۷، حدیث:۵۶

2 ...... حدیقة ندیة، المبحث السادس من المباحث السبعة...الخ، ۱/۵۱۷ ملخصاً

www.dawateislami.net

त़ाआ़त व इ़बादात में इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है क्यूं कि इस में रिया से हिफ़ाज़त है और बा'ज़ कहते हैं कि इ़बादत में इज़्हार अफ़्ज़ल है ताकि दूसरे उस की पैरवी कर के उस जैसा अ़मल करें । ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल ह़कीम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی इस में दरमियानी सूरत इख़्तियार करते हुए फ़रमाते हैं : अगर आदमी को अपने नफ़्स पर रिया का अन्देशा हो तो इ़बादात को पोशीदा त़ौर पर अदा करना बेहतर है ताकि अ़मल बात़िल होने से मह़फ़ूज़ रहे और अगर रिया से दिल बिल्कुल साफ़ हो और रिया के शाइबे से मह़फ़ूज़ होने का पुख़्ता यक़ीन हो तो उस के ह़क़ में इज़्हार अफ़्ज़ल है ताकि उस की इक़्तिदा का फ़ाएदा ह़ासिल हो । बा'ज़ उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं : फ़र्ज़ इ़बादात में इज़्हार अफ़्ज़ल है पस फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिद में अदा करना घर में अदा करने से अफ़्ज़ल है और नफ़्ल नमाज़ घर में अदा करना मस्जिद में अदा करने से अफ़्ज़ल है । इसी त़रह़ ज़कात ज़ाहिर कर के देना पोशीदा देने से अफ़्ज़ल है और पोशीदा नफ़्ली स-दक़ा अ़लानिया से अफ़्ज़ल है । इसी पर दीगर इ़बादात को क़ियास कर लीजिये (या'नी फ़र्ज़ इ़बादात में इज़्हार और नफ़्ली इ़बादात में इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है ।)[1]

तफ़सीरे क़ुरत़ुबी में है : ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुबारक है : बेहतर ज़िक्र वोह है जो पोशीदा हो और बेहतर रिज़्क़ वोह है जो किफ़ायत कर

1 ..... تفسیرِ خازن، پ۸، الاعراف، تحت الآیۃ: ۵۵، ۲/۱۰۳

www.dawateislami.net

जाए।[1] शरीअ़त में येह बात साबित है कि वोह आ'माल जिन को दिखा कर करना लाज़िम नहीं उन्हें छुपा कर करने में अ़लानिया से ज़ियादा सवाब है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बिन अबुल ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इर्शाद फ़रमाया कि हम ने ज़मीन पर चन्द ऐसे लोगों को पाया जो अपने आ'माल को छुपाने की इन्तिहाई कोशिश करते हैं मगर हमेशा उन का अ़मल ज़ाहिर हो जाता है।[2]

पोशीदा अ़मल सत्तर गुना अफ़्ज़ल है

पोशीदा इबादत के बारे में हादिये राहे नजात, सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : वोह ज़िक्र जिस को निगह्बान फ़िरिश्ते भी न सुन सकें, उस ज़िक्र जिस को वोह फ़िरिश्ते सुन सकें सत्तर द-रजा ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है।[3] एक और ह़दीस में इर्शाद फ़रमाया : ज़ाहिरी अ़मल के मुक़ाबले में पोशीदा अ़मल अफ़्ज़ल है।[4] मगर ऐसा शख़्स कि जिस की पैरवी की जाती हो वोह लोगों को रग़बत दिलाने की निय्यत से ऐसा अ़मल ज़ाहिर कर सकता है जब कि इस इज़्हार में रिया की आमेज़िश न हो। इस त़रह़ इख़्लास के साथ अ़मल के इज़्हार से वोह सवाबे अ़ज़ीम का ह़क़दार है जैसा कि ह़दीसे पाक में है : जब अ़लानिया

---

1 ..... مسندِ امام احمد، مسند ابی اسحاق سعد بن ابی وقاص، ۱/۳۶۴، حدیث: ۱۴۷۷

2 ..... تفسیرِ قرطبی، پ ۸، الاعراف، تحت الآیۃ: ۵۵، ۴/۱۶۲

3 ..... کنزُ العُمّال، من حرف الھمزۃ فی الاذکار... الخ، الباب الاوّل فی الذکر و فضیلتہ، الجزء: ۱، ۱/۲۲۷، حدیث: ۱۹۲۵

4 ..... شُعَبُ الْاِیمان، باب فی السرور بالحسنۃ والاغتمام بالسیئۃ، ۵/۳۷۶، حدیث: ۷۰۱۲

www.dawateislami.net

अ़मल की पैरवी की जाए तो वोह (ज़ाहिर किया जाने वाला अ़मल) छुप कर किये जाने वाले अ़मल से अफ़्ज़ल है।[1]

पोशीदा दुआ़ अफ़्ज़ल है या अ़लानिया ?

अ़र्ज़ : पोशीदा दुआ़ अफ़्ज़ल है या अ़लानिया ? नीज़ दुआ़ में इख़्लास कैसे ह़ासिल हो ?

इर्शाद : दुआ़ **अल्लाह** तआ़ला से ख़ैर त़लब करने और मुनाजात करने का नाम है लिहाज़ा इस में पोशी-दगी ही बेहतर है। पोशीदा त़ौर पर दुआ़ करने में यक्सूई और इख़्लास की ने'मत मुयस्सर होती है नीज़ रियाकारी से भी ह़िफ़ाज़त होती है। कु़रआने करीम और अह़ादीसे मुबा-रका में पोशीदा त़ौर पर दुआ़ करने की तरग़ीब दी गई है चुनान्चे पारह 8 **सू-रतुल आ'राफ़** की आयत नम्बर 55 में इर्शाद होता है :

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّ خُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْنَ ﴿۵۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब से दुआ़ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक ह़द से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं।

इस आयते मुबा-रका के तह़त ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अह़मद अन्सारी कु़रतुबी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : लफ़्ज़ "ख़ुफ़्या" से मुराद दिल में दुआ़ करना है ताकि रियाकारी की तबाही से बचा जा सके। इसी वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने

مدینہ

1 ...... شُعَبُ الْاِیمان، باب فی السرور بالحسنة والاغتمام بالسیئة، ۵/ ۳۷۶، حدیث: ۷۰۱۲

www.dawateislami.net

बरगुज़ीदा बन्दे ह़ज़रते सय्यिदुना ज़-करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام के मु-तअ़ल्लिक़ ख़बर देते हुए उन की ता'रीफ़ क़ुरआने पाक में कुछ इस त़रह़ बयान फ़रमाई : ﴿اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا﴾ (پ۱۶،مریم:۳)[1]

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब उस ने अपने रब को आहिस्ता पुकारा ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : आहिस्ता दुआ़ करना बुलन्द आवाज़ की सत्तर दुआ़ओं के बराबर है ।[2]

रही बात दुआ़ में इख़्लास पैदा करने की तो इस के लिये ज़रूरी है कि पहले उन अस्बाब को दूर किया जाए जो इख़्लास ख़त्म करने का सबब बनते हैं । दुआ़ मांगते वक़्त ह़त्तल इम्कान दिल को दूसरों के ख़यालात से पाक करे कि दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ास नज़रे करम फ़रमाने की जगह है । दुआ़ में ज़ाहिरी बदन की आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ साथ दिल भी ह़ाज़िर हो और दुआ़ की क़बूलिय्यत का यक़ीन भी, कि ह़दीसे पाक में है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करो क़बूलिय्यत का यक़ीन रखते हुए और जान रखो कि बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी ग़ाफ़िल खेलने वाले दिल की दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमाता ।[3] इज्तिमाई दुआ़ करवानी हो तो इस में भी इख़्लास को बर क़रार रखने की भरपूर कोशिश की जाए, लोगों

مدینہ

1 ...... تفسیرِ قرطبی، پ ۸، الاعراف، تحت الآیۃ: ۵۵، ۴/ ۱۶۱

2 ...... فِردَوسُ الاخبار، باب الدال، ۱/ ۳۸۷، حدیث: ۲۸۶۹

3 ...... ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی جامع الدعوات...الخ، ۵/ ۲۹۲، حدیث: ۳۴۹۰

www.dawateislami.net

को दिखाने और सुनाने के लिये रिक़्क़त पैदा करने से इज्तिनाब किया जाए, हां ! अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ताओं और अपनी ख़ताओं को पेशे नज़र रखते हुए ख़ुद ब ख़ुद रिक़्क़त पैदा हो जाए तो इस में ह़रज नहीं । इस त़रह़ दुआ़ मांगेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इख़्लास भी नसीब होगा और दुआ़ भी क़बूल होगी ।

हमेशा निगाहों को अपनी झुका कर
करूं ख़ाशिआ़ना दुआ़ या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

नेकियों को छुपाने के लिये झूट बोलना कैसा ?

अ़र्ज़ : किसी के पूछने पर अपनी नेकियों को ज़ाहिर कर दिया जाए या नेकियों को छुपाने के लिये झूट बोलने की इजाज़त है ?

इर्शाद : अपनी नेकियों को रियाकारी की तबाहकारी से बचाने के लिये पोशीदा रखना ज़रूरी है मगर नेकियों को छुपाने के लिये झूट बोलने की इजाज़त नहीं। अगर कोई दूसरा पूछे तो उस के पूछने पर ब क़दरे ज़रूरत अपनी नेकी का इज़्हार कर दीजिये, म-सलन किसी ने आप से ह़ज के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा कि आप ने ह़ज अदा कर लिया है ? अगर आप ने ह़ज किया हुवा है तो जवाबन कह दीजिये कि जी हां ! ऐसा न हो कि आप उस को अपने ह़ज व उ़म्रह की ता'दाद गिनवाना शुरूअ़ कर दें। ऐसे ही अगर आप ने रोज़ा रखा हुवा है तो किसी ने आप से रोज़े के मु-तअ़ल्लिक़ पूछ लिया तो आप जवाबन कह दीजिये कि मैं रोज़े से हूं मगर ऐसा न हो कि आप उस को तफ़्सीलात बताना शुरूअ़ कर दें कि

www.dawateislami.net

जनाब ! आप तो आज का पूछ रहे हैं, मैं तो लगातार तीन महीनों (रजब, शा'बान और र-मज़ान) के रोज़े रखता हूं और येह बरसों से मेरा मा'मूल है। ऐसा हरगिज़ नहीं करना चाहिये कि येह दर ह़क़ीक़त अपनी नेकियों का चरचा करना है । बहरह़ाल ब क़दरे ज़रूरत अपनी नेकियों के बयान करने में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं। ह़दीसे पाक में है : जब तुम में से किसी को खाने की दा'वत दी जाए और वोह रोज़े से हो तो उसे चाहिये कि कह दे कि मैं रोज़ादार हूं।[1]

इस ह़दीसे पाक के तह़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : रोज़ादार को हुक्म दिया गया कि वोह अपने रोज़े का उ़ज़्र पेश करते हुए दा'वत क़बूल न करे अगर्चे नफ़्ली रोज़े का पोशीदा रखना मुस्तह़ब है मगर यहां इस के इज़्हार का हुक्म दिया गया ताकि इन दोनों के दरमियान बुग़्ज़ो अ़दावत पैदा न हो।[2]

अपने नाम के साथ अल्क़ाबात लगाना

अ़र्ज़ : अपने नाम के साथ ह़ाफ़िज़, क़ारी, ह़ाजी, अ़ल्लामा और मुफ़्ती वग़ैरा लगाना कैसा है ? नीज़ क्या अल्क़ाबात लगाने से भी दूसरों पर नेकियों का इज़्हार होता है ?

इर्शाद : अपने नाम के साथ बिला ज़रूरत अल्क़ाबात लगाना दर अस्ल अपनी ख़ूबियां बयान कर के अपने मुंह से अपनी ता'रीफ़

مدینہ

1 ..... مُسلِم، کتاب الصیام، باب الصیام یدعی... الخ، ص۵۷۹، حدیث: ۱۱۵۰

2 ..... فیض القدیر، حرف الھمزۃ، ۱/۴۴۵، تحت الحدیث: ۶۰۸ ملخصاً

www.dawateislami.net

करना है और येह जाइज़ नहीं। हां ! अगर इस की ह़ाजत हो तो वक़्ते ह़ाजत, ब क़दरे ज़रूरत तह्दीसे ने'मत के त़ौर पर या किसी और दुरुस्त निय्यत से इन ख़ूबियों का इज़्हार किया जा सकता है जैसा कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ख़ुद सिताई (या'नी अपने मुंह से अपनी ता'रीफ़ करना) जाइज़ नहीं मगर वक़्ते ह़ाजत, इज़्हारे ह़क़ीक़त तह्दीसे ने'मत है (या'नी ब वक़्ते ह़ाजत अपने बारे में ह़क़ीक़त का इज़्हार करना भी ने'मत का चरचा करना है)। सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बादशाहे मिस्र से फ़रमाया :

قَالَ اجْعَلْنِیْ عَلٰى خَزَآىٕنِ الْاَرْضِۚ اِنِّیْ حَفِیْظٌ عَلِیْمٌ ﴿۵۵﴾ (پ۱۳، یوسف:۵۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : यूसुफ़ ने कहा मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर कर दे बे शक मैं ह़िफ़ाज़त वाला इल्म वाला हूं।[1]

अगर ह़ाजते शर-ई न हो तो बिला वज्ह अपने नाम के साथ अल्क़ाबात लगा कर बिला वासित़ा या बिल वासित़ा अपनी ख़ूबियां लोगों पर ज़ाहिर करना ताकि लोग ब नज़रे तह्सीन देखें और अ-दबो एह़तिराम बजा लाएं येह मम्नूअ़ है लिहाज़ा अपने नाम के साथ अल्क़ाबात वग़ैरा लगाने से बचना चाहिये कि इस से ह़ाफ़िज़े क़ुरआन होने और ह़ज की सआ़दत से मुशर्रफ़ होने का पता चलता है और येही नेकियों का इज़्हार है। बहरह़ाल अपने नाम के साथ अल्क़ाबात लगाने का दारो मदार निय्यत पर है। अगर कोई अपने नाम के साथ इस निय्यत से ह़ाफ़िज़, क़ारी

1....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 141

www.dawateislami.net

और ह़ाजी बोलने या लिखने का एहतिमाम करे कि लोग उसे ब नज़रे तह़्सीन देखें, مَاشَآءَاللّٰه बोलें, एह़तिरामन ह़ाफ़िज़ साह़िब, क़ारी सह़िब और ह़ाजी साह़िब कह कर पुकारें, दुआ़ओं की इल्तिजाएं करें तो इस सूरत में मन्अ़ है और अगर रिया की निय्यत न हो तो मन्अ़ नहीं जैसे अपने नाम के साथ ह़ाफ़िज़, क़ारी या ह़ाजी इस निय्यत से लिखे या बोले ताकि किसी इदारे या अ़लाक़े में अपने हम-नामों में इस की जल्दी पहचान हो सके और तआ़रुफ़ में आसानी हो तो ह़रज नहीं । यूंही कोई दूसरा शख़्स उस के नाम के साथ येह अल्फ़ाज़ बोलता या लिखता है तो कोई मुज़ा-यक़ा नहीं मगर अपने नफ़्स पर क़ाबू रखे और इस पर लोगों के सामने ख़ुशी का इज़्हार न करे बल्कि अपनी ख़त़ाओं और ऐ़बों को याद रखे ।

आज बनता हूं मुअ़ज़्ज़ज़ जो खुले ह़श्र में ऐ़ब
आह ! रुस्वाई की आफ़त में फंसूंगा या रब !

(वसाइले बख़्शिश)

अपने "सय्यिद" होने का इज़्हार करना कैसा ?

अ़र्ज़ : सादाते किराम का अपने "सय्यिद" होने का इज़्हार करना कैसा है ?

इर्शाद : सादाते किराम का अपने आप को सय्यिद ज़ाहिर करने में अगर फ़ख़्र में पड़ जाने का ख़ौफ़ न हो तो सय्यिद ज़ाहिर करने में कोई ह़रज नहीं मगर एह़तियात़ अपने आप को पोशीदा रखने ही में है क्यूं कि बसा अवक़ात लोग "सय्यिद साह़िब", "सय्यिद साह़िब" कह कर ता'ज़ीम शुरूअ़ कर देते हैं तो फिर शैत़ान भी

www.dawateislami.net

ह़म्ला आवर हो जाता है यूं नफ़्स पर क़ाबू पाना दुश्वार हो जाता है अलबत्ता अगर कोई ह़-सबो नसब पूछे तो इस सूरत में अपना सय्यिद होना ज़ाहिर कर दें कि झूट से बचना ज़रूरी है। कहीं ऐसा न हो कि आ़जिज़ी व इन्किसारी करते हुए मुंह से झूट निकल जाए और गुनाह का वबाल सर पर आ पड़े। अगर कोई लोगों में अ़ज़मत पाने के लिये इस का इज़्हार करे तो येह जाइज़ नहीं और येह भी याद रहे कि अ़ज़मत का दारो मदार मह्ज़ नसब पर नहीं बल्कि अस्ल बुन्याद तक़्वा व परहेज़ गारी पर है जैसा कि पारह 26 **सू-रतुल ह़ुजुरात** की आयत नम्बर 13 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़ गार है।

लिहाज़ा फ़ख़्र के इज़्हार के लिये ह़-सबो नसब बयान करना, लोगों से इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत चाहना और दिल में येह ख़्वाहिश रखना कि लोग मेरा अ-दबो एह़तिराम बजा लाएं येह मम्नूअ़ है ऐसे लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी से डरते रहना चाहिये। यहां येह बात भी ज़ेह्न नशीन कर लीजिये कि अगर कोई सय्यिद साह़िब अपना सय्यिद होना ज़ाहिर करते हों तो हमें उन के मु-तअ़ल्लिक़ बद गुमानी करने की इजाज़त नहीं क्यूं कि दिलों का ह़ाल रब्बे जुल जलाल को मा'लूम है, हम पर लाज़िम

www.dawateislami.net

है कि हुस्ने ज़न से काम लें।

दिल में येह ख़्वाहिश न रखना सब करें मेरा अदब
डर कहीं नाराज़ हो जाए न तुझ से तेरा रब

(वसाइले बख़्शिश)

इमाम, मुअज़्ज़िन और ख़तीब रियाकारी से कैसे बचें ?

अ़र्ज़ : ह़ाफ़िज़ व क़ारी, इमाम, मुअज़्ज़िन और ख़तीब रियाकारी से कैसे बच सकते हैं ?

इर्शाद : किसी भी काम को बजा लाने या उस से बचने के लिये उस का इ़ल्म होना ज़रूरी है जब तक उस के बारे में इ़ल्म नहीं होगा उस वक़्त तक उस काम के करने या उस से बचने में कमा ह़क़्क़ुहू काम्याबी ह़ासिल नहीं हो सकती। इस लिये रियाकारी से बचने के लिये सब से पहले येह जानना ज़रूरी है कि रियाकारी किसे कहते हैं ? रियाकारी की ता'रीफ़ येह है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के इ़लावा किसी और इरादे से इ़बादत करना।" गोया इ़बादत से येह ग़रज़ हो कि लोग उस की इ़बादत पर आगाह हों ताकि वोह उन लोगों से माल बटोरे या लोग उस की ता'रीफ़ करें, उसे नेक आदमी समझें या उसे इ़ज़्ज़त वग़ैरा दें।[1] रियाकारी इख़्लास का मु-तज़ाद है या'नी अगर मह़्ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये कोई काम किया जाए तो इख़्लास पर मब्नी होगा और अगर शोहरत या नुमूदो नुमाइश के लिये किया जाए तो

1 ...... الزّواجر، الباب الاوّل فی الکبائر الباطنیة...الخ، الکبیرۃُ الثانیۃ الشرک الاصغر...الخ، ۱/۸۲

www.dawateislami.net

रियाकारी की नज़्र हो जाएगा जिस के नतीजे में नेक अ़मल का सवाब ज़ाएअ़ हो जाता है। हमारे मुआ़-शरे में मु-तज़क्करा बाला लोगों को इ़ज़्ज़तो क़द्र की निगाह से देखा जाता और एह़तिराम की जगह बिठाया जाता है और ऐसा होना भी चाहिये मगर लोग जिस की इ़ज़्ज़त करें और उस के आगे हाथ बांध कर खड़े हों तो उसे अपने नफ़्स पर क़ाबू रखना और हुब्बे जाह से बचाना ना मुम्किन तो नहीं अलबत्ता मुश्किल ज़रूर होता है। येही वज्ह है कि हमारे मुआ़-शरे में उ़मूमन येह कमज़ोरियां पाई जाती हैं कि मुअज़्ज़िन साह़िब अपने आप को मुअज़्ज़िन के बजाए नाइब इमाम कहना और कहलवाना पसन्द करते हैं हालां कि मुअज़्ज़िन होना भी बहुत बड़ी सआ़दत है कि इसी सआ़दत ने मुअज़्ज़िने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को का'बए मुशर्रफ़ زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की छत पर अज़ान देने के शरफ़ से बारयाब किया मगर अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! दुन्यवी इ़ज़्ज़त व हुब्बे जाह के त़लब गार मुअज़्ज़िन कहलवाना गवारा नहीं करते। यूंही बा'ज़ मुअज़्ज़िन माइक पर ठहर ठहर कर और ख़ूब सूरत लहज़े में अज़ान देते हैं और बिग़ैर माइक के अज़ान देने का अन्दाज़ ही बदल जाता है।

इसी त़रह़ इमाम साह़िब भी इमाम कहलवाने के बजाए ख़त़ीब साह़िब बल्कि बा'ज़ तो जब तक ख़त़ीबे आ'ज़म न कहलवाएं उन के दिल को तस्कीन नहीं होती ह़ालां कि इमाम होना वोह श-रफ़े अ़ज़ीम है कि जिसे बारगाहे मुस्त़फ़ा से फ़ैज़ मिला है

www.dawateislami.net

लेकिन हमारे अइम्मा ह़ज़रात इमाम के बजाए ख़त़ीब के लक़ब को पसन्द करते हैं शायद इस लिये कि हमारे मुआ़-शरे में इमाम के बजाए ख़त़ीब को ज़ियादा अहम्मिय्यत दी जाती है। इसी त़रह़ ख़त़ीब साहि़ब का बिला ज़रूरत येह कहना कि "फ़क़ीर फ़ुलां मस्जिद में जुमुआ़ पढ़ाता है।" इस में भी हुब्बे जाह का उ़न्सुर हो सकता है वरना यूं भी कहा जा सकता है कि "फ़क़ीर फ़ुलां मस्जिद में जुमुआ़ अदा करता है" इसी त़रह़ बयान में बिला ज़रूरत इस त़रह़ के जुम्ले कहना कि "कई दिन से मुसल्सल बयानात के सबब गला साथ नहीं दे रहा", "आज ही फ़ुलां मुल्क या शह्र के दौरे से वापसी हुई है।" वग़ैरा वग़ैरा मुनासिब नहीं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन ह़ाफ़िज़ व क़ारी और इमाम व ख़त़ीब होना कोई मा'मूली बात नहीं येह तो बहुत बड़ी सआ़दत है। अह़ादीसे मुबा-रका में इन के बड़े फ़ज़ाइल बयान हुए हैं लिहाज़ा इन ह़ज़रात को चाहिये कि अपने अन्दर इख़्लास पैदा करें ताकि इन फ़ज़ाइल को ह़ासिल कर सकें। लोगों को दिखाने, अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठाने और अपना नाम कमाने से हर दम बचने की कोशिश करें कि येह रियाकारी है और रियाकारों के लिये हलाकत ही हलाकत है चुनान्चे नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : (क़ियामत के दिन) एक वोह शख़्स जिस ने इ़ल्म पढ़ा और पढ़ाया और क़ुरआन पढ़ा, वोह ह़ाज़िर किया जाएगा (**अल्लाह** तआ़ला) उस को ने'मतें याद दिलाएगा, वोह

www.dawateislami.net

ने'मतों को पहचानेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : इन ने'मतों के मुक़ाबले में तू ने क्या अ़मल किया है ? कहेगा : मैं ने तेरे लिये इ़ल्म सीखा, सिखाया और क़ुरआन पढ़ा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : तू झूटा है, तू ने इ़ल्म इस लिये पढ़ा कि तुझे आ़लिम कहा जाए और क़ुरआन इस लिये पढ़ा कि तुझे क़ारी कहा जाए सो तुझे कह लिया गया। हुक्म होगा कि इसे मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाए।[1] एक और ह़दीसे पाक में नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत है : बेशक जहन्नम में एक ऐसी वादी है जिस से जहन्नम भी हर रोज़ चार सो मर्तबा पनाह मांगता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह वादी उम्मते मुह़म्मदिय्यह عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के उन रियाकारों के लिये तय्यार की है जो क़ुरआने पाक के ह़ाफ़िज़, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा के लिये स-दक़ा करने वाले, **बैतुल्लाह** का ह़ज करने वाले और राहे ख़ुदा में निकलने वाले होंगे।[2]

नफ़्ली रोज़ा और स-दक़ा व ख़ैरात का पोशीदा रखना

अ़र्ज़ : नफ़्ली रोज़ा रखने और स-दक़ा व ख़ैरात करने वाले अपनी नेकियां कैसे छुपाएं ?

इर्शाद : जिस को वाक़ेई़ अपनी नेकियां छुपाने का शौक़ और रियाकारी की तबाह कारियों से बचने का ख़ौफ़ हो तो वोह ख़ुद ही अपने लिये राहें निकाल लेता है। जब इन्सान को किसी अच्छे काम

مدینہ

1 ..... مُسلِم، کتاب الامارۃ، باب من قاتل للریاء...الخ، ص۱۰۵۶، حدیث: ۱۹۰۵

2 ..... مُعجمِ کبیر، الحسن عن ابن عباس، ۱۲/ ۱۳۶، حدیث: ۱۲۸۰۳

www.dawateislami.net

का जज़्बा हो और वोह इस के लिये पूरी कोशिश करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे काम्याबी की मन्ज़िल तक पहुंचा देता है चुनान्चे पारह 21 **सू-रतुल अ़न्कबूत** की आयत नम्बर 69 में इर्शादे रब्बुल इबाद है :

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۶۹﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक **अल्लाह** नेकों के साथ है।

रही बात नफ़्ली रोज़ादार की, कि वोह अपना रोज़ा कैसे छुपाए ? तो इस के लिये अ़र्ज़ है कि रोज़ा एक बात़िनी इ़बादत है जब तक रोज़ादार ख़ुद न बताए तो किसी दूसरे को उस के रोज़ादार होने का इ़ल्म नहीं होता इस लिह़ाज़ से येह तो है ही पोशीदा अ़मल अलबत्ता ऐसे अफ़्आ़ल से बचा जाए जिन से रोज़ादार होने का दूसरों को इ़ल्म हो म-सलन बार बार थूकना, होंटो को ख़ुश्क रखना वग़ैरा। हां ! इज्तिमाई त़ौर पर जहां नफ़्ली रोज़े रखने का एहतिमाम हो वहां अपने रोज़ों को पोशीदा रखना मुम्किन नहीं होता और इस में ह़रज भी नहीं क्यूं कि जो मजबूर है वोह मा'ज़ूर है।[1]

ऐसे ही नफ़्ली स-दक़ा व ख़ैरात करने वाले अगर अपने अ़मल

1.... اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता कई इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों में र-जबुल मुरज्जब और शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म दोनों महीनों में रोज़े रखने की तरकीब होती है और मुसलसल रोज़े रखते हुए येह ह़ज़रात र-मज़ानुल मुबारक से मिल जाते हैं (शो'बा फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

को छुपाना चाहें तो इन के लिये भी बहुत रास्ते हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा निज़ामुद्दीन ह़सन बिन मुह़म्मद नीशापूरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِی फ़रमाते हैं : एक गुरौह ने अपना अ़मल छुपाने में इस क़दर मुबा-लग़ा किया कि स-दक़ा लेने वाले भी उन को न पहचानें। इस लिये बा'ज़ तो अपने स-दक़े को अन्धे के हाथ में दे देते। बा'ज़ अपने स-दक़े को फ़क़ीर के रास्ते में रख देते। बा'ज़ अपने स-दक़े को उस जगह रख देते जहां फ़क़त़ फ़क़ीर ही बैठता है और फ़क़त़ वोही उसे देखे ह़त्ता कि देने वाले को भी इ़ल्म न हो (कि फ़क़ीर ने ले लिया है)। बा'ज़ अपने स-दक़े को सोए हुए फ़क़ीर के कपड़े से बांध देते। बा'ज़ अपने स-दक़े को किसी और के हाथ फ़क़ीर तक पहुंचा देते।[1]

अपने रोज़ों और स-दक़ा व ख़ैरात को पोशीदा रखने वालों के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का इर्शादे बेहतरीन नसीह़त बुन्याद है चुनान्चे ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम में से किसी एक का रोज़ा हो तो वोह अपने सर और दाढ़ी में तेल लगाए और होंटों पर भी हाथ फेरे ता कि लोगों को मा'लूम न हो कि येह रोज़ादार है और जब दाएं हाथ से दे तो बाएं हाथ को ख़बर न हो और जब नमाज़ पढ़े तो अपने दरवाज़े पर पर्दा डाल दे।[2]

1 ......تفسیر غرائب القرآن، پ۳، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۷۱، ۲/ ۵۰-۵۱

2 ......احیاء العلوم، کتاب ذم الجاہ والریاء، الشطر الثانی...الخ، بیان ذم الریاء، ۳/ ۳۶۱

www.dawateislami.net

रोज़े और स-दक़ा व ख़ैरात पोशीदा रखने के वाक़िआ़त

अ़र्ज़ : नफ़्ली रोज़े और स-दक़ा व ख़ैरात को पोशीदा रखने के ह़वाले से बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن के कुछ वाक़िआ़त बयान फ़रमा दीजिये ।

इर्शाद : हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن जो भी अ़मल करते महज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी ह़ासिल करने के लिये करते येही वज्ह है कि इन का हर काम रियाकारी से दूर और इख़्लास से मा'मूर हुवा करता था, मगर अफ़्सोस ! आज हमारी ह़ालत येह है कि नामए आ'माल में दूर दूर तक नेकी का नामो निशान नहीं होता, अगर ख़ुश क़िस्मती से कोई नेक अ़मल कर भी लें म-सलन किसी एक दिन का नफ़्ली रोज़ा ही रख लें तो फूले नहीं समाते, उस वक़्त तक सुकून नहीं मिलता जब तक लोगों के सामने अपने रोज़ादार होने का ए'लान कर के उन से नेकनामी की सनद न ले लें जब कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن सालहा साल से रोज़ादार होने के बा वुजूद लोगों को बताना तो दूर की बात अपने घर वालों तक को ख़बर नहीं होने देते चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी अ़दी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुसल्सल चालीस साल तक इस त़रह़ रोज़े रखते रहे कि उन के घर वालों को भी इ़ल्म न हो सका । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه रेशम फ़रोश थे और आप का येह मा'मूल था कि सुब्ह़ घर से जाते हुए दो पहर का खाना

www.dawateislami.net

साथ ले जाते, रास्ते में (किसी फ़क़ीर को) बतौ़रे स-दक़ा दे दिया करते और घर आ कर शाम के खाने से इफ़्तार फ़रमा लेते ताकि घर वालों को आप का रोज़ादार होना मा'लूम न हो सके।[1]

पोशीदा स-दक़ा व ख़ैरात करने का जज़्बा

ख़ानदाने अहले बैत के चश्मो चराग़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पोशीदा स-दक़ा व ख़ैरात करने का जज़्बा और त़रीक़ा मुला-ह़ज़ा कीजिये । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत से ग़ु-रबाए अहले मदीना के घरों में इस क़दर छुपा कर रक़म भेजा करते थे कि उन ग़ु-रबा को भी ख़बर न होती कि येह माल कहां से आता है ? मगर जब आप का विसाल हो गया और रात में पोशीदा मिलने वाला माल ग़ु-रबा ने न पाया तो उन को पता चला कि येह माल भेजने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे। ह़ज़रते सय्यिदुना शैबा बिन नआ़मा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हुवा तो लोगों को मा'लूम हुवा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ 100 घरों की कफ़ालत फ़रमाया करते थे ।[2]

मेरा नाम किसी पर भी ज़ाहिर न फ़रमाएं

इसी त़रह़ एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्माईल बिन

مدینہ

1 ..... تاریخ بغداد، باب الدّال، داود بن نصیر، ۸/۳۴۶

2 ..... سیر اعلام النبلاء، علی بن ابی الحسین...الخ، ۵/۳۳۶-۳۳۷ ملخصاً

www.dawateislami.net

नुजैद नीशापूरी عَلَیۡہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی के शैख़ अबू उ़स्मान ह़ीरी عَلَیۡہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی को मुजाहिदीन के लिये कुछ रक़म की ज़रूरत पड़ी लेकिन कहीं से इन्तिज़ाम न हो सका, तो शैख़ ने सय्यिदुना इब्ने नुजैद عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمَجِیۡد से इस ज़रूरत को बयान फ़रमाया। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़ौरन दो हज़ार दिरहमों की थेलयां ला कर शैख़ के क़दमों पर डाल दीं। शैख़ बेह़द ख़ुश हुए और भरी मजलिस में इस का ए'लान फ़रमा दिया और लोगों ने ख़ूब वाह वाह की मगर इब्ने नुजैद عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمَجِیۡد को इन्तिहाई सदमा हुवा कि अफ़्सोस ! मेरा येह अ़-मले ख़ैर लोगों पर ज़ाहिर हो गया। बे ताबाना भरी मजलिस में शैख़ से अ़र्ज़ किया कि हु़ज़ूर ! मुझे मेरा माल वापस कर दीजिये मैं अभी इस को राहे ख़ुदा में ख़र्च करना नहीं चाहता। शैख़ ने फ़ौरन दिरहमों की थेलियां इब्ने नुजैद عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمَجِیۡد के सामने डाल दीं, आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ थेलियां उठा कर घर ले आए। ह़ाज़िरीने मजलिस में ख़ूब चे मी गोइयां हुईं। जब रात हुई और शैख़ अकेले रह गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने नुजैद عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمَجِیۡد फिर दो हज़ार दिरहमों की थेलियां ले कर शैख़ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि मेरे शैख़ ! आप इस माल को पोशीदा तौ़र पर ख़र्च फ़रमाएं और मेरा नाम हरगिज़ किसी पर ज़ाहिर न फ़रमाएं। येह सुन कर शैख़ अबू उ़स्मान ह़ीरी عَلَیۡہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی पर ह़ालते गिर्या त़ारी हो गई और फ़रमाने लगे कि इब्ने नुजैद عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمَجِیۡد ! तेरी हिम्मत पर सद आफ़रीन है।[1]

[1] بستانُ المحدثین، ص ۲۵۲-۲۵۳ ملخصاً

www.dawateislami.net

नफ़्से बदकार ने दिल पर येह क़ियामत तोड़ी
अ़-मले नेक किया भी तो छुपाने न दिया

(सामाने बख़्शिश)

नमाज़ी और ह़ाजी नेकियां कैसे छुपाएं ?

अ़र्ज़ : नमाज़ी और ह़ाजी किस त़रह़ अपनी नेकियां छुपाएं ?

इर्शाद : नमाज़ ह़ो या ह़ज, ज़कात ह़ो या ख़ैरात, कोई सा भी अ़-मले ख़ैर ह़ो उसे मख़्फ़ी ही रखने में उस की ह़िफ़ाज़त और बक़ा है । फ़ी ज़माना अपनी नेकियों को छुपाना बहुत मुश्किल है मगर ना मुम्किन नहीं । ह़दीसे पाक में है : आदमी का फ़र्ज़ नमाज़ के इ़लावा (नफ़्ल) नमाज़ अपने घर में पढ़ना अफ़्ज़ल है ।[1] मगर आह ! आज हमारे दिलों में सुकून व इ़त्मीनान है न घरों में अम्नो सलामती कि फ़राइज़ व तह़िय्यतुल मस्जिद के इ़लावा बक़िय्या नमाज़ व नवाफ़िल वग़ैरा घरों में छुप कर यक्सूई के साथ अदा कर सकें और मज़ीद येह कि बक़िय्या नमाज़ घर में अदा करने पर लोगों की त़रफ़ से बद गुमानी उन्हें गुनाह में मुब्तला कर सकती है लिहाज़ा बक़िय्या नमाज़ भी मस्जिद ही में पढ़ लीजिये । **मेरे** आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : अब फ़ी ज़माना सुन्नतों के मसाजिद ही में पढ़ने पर मुसल्मानों का अ़मल है और इस में कई मस्लह़तें हैं कि घर जा कर सुन्नतें अदा करने में वोह इ़त्मीनान नहीं होता जो मसाजिद में होता है और लोगों की आ़दत के ख़िलाफ़ करना बाइ़से त़ा'न

1 ..... بخاری، کتاب الاذان، باب صلاۃ اللیل، ۱/۲۶۰، حدیث: ۷۳۱

www.dawateislami.net

व रुस्वाई और बद गुमानियों और ग़ीबतों का दरवाज़ा खोलना है। घर में सुन्नतें (और नवाफ़िल) अदा करने का हुक्म सिर्फ़ मुस्तहब है मगर इन मस्लहतों की रिआयत को इस हुक्म पर तरजीह दी जाएगी लिहाज़ा अब सुन्नतें वग़ैरा मसाजिद ही में अदा की जाएं। अइम्मए दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : मा'मूल के ख़िलाफ़ करना शोहरत और मक्रूह है।[1]

हां ! नफ़्ल नमाज़ों की अदाएगी, तिलावते क़ुरआने पाक और वज़ाइफ़ वग़ैरा जहां तक मुम्किन हो पोशीदा तौ़र पर अदा कीजिये और अदा करने के बा'द भी इन्हें लोगों से मख़्फ़ी रखिये और बारगाहे इलाही में इन की क़बूलिय्यत की दुआ करते रहिये। बसा अवक़ात शैत़ान लोगों को "तह्दीसे ने'मत" का जज़्बा दिला कर उन्हें इबादत ज़ाहिर करने पर उक्साता है तो अच्छे भले नेक व पारसा नज़र आने वाले भी "तह्दीसे ने'मत" कह कर अपनी इबादात के डंके बजाना शुरूअ़ कर देते हैं कि "मैं तो इतने साल से बा जमाअ़त नमाज़ अदा कर रहा हूं, इतना अ़र्सा हो गया मेरी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं हुई, मैं हमेशा पहली सफ़ में नमाज़ अदा करता हूं, रात को जब तक उठ कर तहज्जुद अदा न कर लूं तो सुकून ही नहीं मिलता वग़ैरा।" इस त़रह़ अपने मुंह मियां मीठू बनने से नेक आ'माल का अज्रो सवाब भी ज़ाएअ़ हो जाता है और लोगों के दिलों में अपनी जगह बनाने के मन्सूबे भी धरे के धरे रह जाते हैं। इस के बर अ़क्स अगर कोई

1 .....फ़तावा र-ज़विय्या, 7/416 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

महज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अ़मल करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से ख़ुश हो कर लोगों के दिलों में उस की महब्बत डाल देता है लोगों के दिल ख़ुद ब ख़ुद उसे नेक मानने लगते हैं।

अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने से क्या फ़ाएदा !

इसी त़रह़ ह़ाजी को चाहिये कि वोह अपने अन्दर इख़्लास पैदा करे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी से डरता रहे और येह तसव्वुर करे कि न जाने मैं ह़ज के मनासिक उस के शायाने शान अदा कर सका हूं या नहीं, मैं वाक़ेई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में भी मक़्बूल ह़ाजी हो चुका हूं या नहीं। यक़ीनन ह़क़ीक़ी ह़ाजी तो वोही है जिस का ह़ज **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बरगाह में क़बूल हो चुका है वरना अपने मुंह मियां मिठ्ठू बनने से क्या फ़ाएदा ! जब ह़ाजी अपने अन्दर इस त़रह़ ख़ौफ़ो ख़शिय्यत की कैफ़िय्यत पैदा करेगा तो उसे अपने आप को "ह़ाजी" कहने कहलवाने और अपने ह़ज़ व उ़म्रह की ता'दाद बयान करने की ख़्वाहिश ही न रहेगी। अपने मुंह मियां मिठ्ठू बनने का शौक़ बहुत बुरा है कि इस से नेक आ'माल दाव पर लग जाते हैं। इस ज़िम्न में एक दाना ग़ुलाम और उस के नादान आक़ा की इ़ब्रत अंगेज़ ह़िकायत मुला-ह़ज़ा कीजिये :

नमक की ख़ात़िर ह़ज का सौदा

एक ग़ुलाम और आक़ा ह़ज कर के पलटे, राह में नमक न रहा, न ख़र्च था कि मोल (क़ीमतन) लेते, एक मन्ज़िल पर आक़ा ने

www.dawateislami.net

ग़ुलाम से कहा : बक़्क़ाल (सब्ज़ी फ़रोश/खाने पीने का सामान बेचने वाले) से थोड़ा सा नमक येह कह कर ले आओ कि "मैं ह़ज से आया हूं।" चुनान्चे वोह गया और येह कह कर थोड़ा सा नमक ले आया। दूसरी मन्ज़िल पर आक़ा ने फिर भेजा और कहा : इस बार यूं कहो कि "मेरा आक़ा ह़ज से आया है।" चुनान्चे इस बार भी ग़ुलाम येह कह कर थोड़ा सा नमक ले आया। तीसरी मन्ज़िल पर आक़ा ने फिर भेजना चाहा, तो ग़ुलाम (जो कि ह़क़ीक़तन आक़ा बनने के क़ाबिल था उस) ने जवाब दिया : परसों नमक के चन्द दानों के बदले अपना ह़ज बेचा, कल आप का बेचा, आज किस का बेच कर लाऊं ?[1]

एक जुम्ले में दो ह़ज ज़ाएअ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई वोह ग़ुलाम बहुत दाना था, उस ने अपने आक़ा और आजकल के हर ह़ाजी साह़िब को कितनी ज़बर दस्त और इ़ब्रत अंगेज़ बात बताई कि अपने ह़ज का ए'लान कर के नमक ह़ासिल करना गोया कि अपना ह़ज ही बेच देना है। इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى एक शख़्स के यहां दा'वत में तशरीफ़ ले गए, मेज़बान ने ख़ादिम से कहा "उन बरतनों में खाना खिलाओ जो मैं दोबारा (दूसरे) ह़ज में लाया हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : मिस्कीन ! तू ने एक जुम्ले में

1 .....फ़ज़ाइले दुआ, स. 281, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

अपने दो ह़ज ज़ाएअ़ कर दिये ।[1]

रियाकारी के ख़ौफ़ से नेक अ़मल तर्क करना कैसा ?

अ़र्ज़ : कोई शख़्स इस अन्देशे से नेक अ़मल तर्क कर दे कि जब रियाकारी, तकब्बुर और ख़ुद नुमाई वग़ैरा से नेक अ़मल अकारत हो जाते हैं तो इन को बजा लाने का क्या फ़ाएदा, क्या ऐसा करना दुरुस्त है ?

इर्शाद : रियाकारी, तकब्बुर और ख़ुद नुमाई वग़ैरा आफ़ात की वज्ह से नेक अ़मल तर्क कर देना दानिश मन्दी नहीं बल्कि सरासर नादानी और वस्वसए शैत़ानी है । इस शैत़ानी वस्वसे को दूर करते हुए नेक आ'माल छोड़ने के बजाए अपनी निय्यत दुरुस्त करनी चाहिये क्यूं कि अगर नाक पर मख्खी बैठ जाए तो मख्खी को उड़ाया जाता है नाक नहीं काटी जाती । हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : रियाकारी के ख़ौफ़ से अ़मल छोड़ देने वाले शख़्स की मिसाल उस ग़ुलाम की त़रह़ है जिसे आक़ा ने ऐसी गन्दुम दी जिस में दीगर दाने भी मिले हुए थे और कहा : इसे अच्छी त़रह़ साफ़ कर दो । ग़ुलाम इस ख़ौफ़ से कि मैं इसे अच्छी त़रह़ साफ़ न कर सकूंगा लिहाज़ा आक़ा की बात पर सिरे से अ़मल ही छोड़ देता है । तो रियाकारी के ख़ौफ़ से सिरे से अ़मल तर्क करना

1 फ़ज़ाइले दुआ, स. 281, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

इख़्लास को तर्क करना है और रियाकारी के ऐसे ख़ौफ़ का कोई ए'तिबार नहीं ।[1]

मीठे मीठे इस्लमी भाइयो ! इख़्लास हो या न हो बहर सूरत फ़राइज़ व वाजिबात बजा लाने ही में फ़ाएदा है । इख़्लास के साथ किये जाने वाले आ'माल का फ़ाएदा तो ज़ाहिर है और बिग़ैर इख़्लास (या'नी रियाकारी वग़ैरा) के साथ किये जाने वाले नेक आ'माल का अगर्चे सवाब नहीं मिलता मगर फिर भी इबादात की सिह्ह़त (या'नी फ़राइज़ व वाजिबात वग़ैरा के ज़िम्मे से साक़ित़ हो जाने) का हुक्म दिया जाएगा ''म-सलन रिया के साथ नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ की सिह्ह़त का हुक्म दिया जाए मगर चूंकि इख़्लास नहीं है लिहाज़ा सवाब नहीं ।''[2] और अगर रियाकार सच्ची तौबा कर ले तो इस की ब-र-कत से गुज़श्ता रियाकारी की ना मक़्बूल इबादात के बारगाहे इलाही में क़बूल होने और सवाब मिलने की उम्मीद है जैसा कि मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : रिया से इबादत ना जाइज़ (या'नी बाति़ल) नहीं हो जाती बल्कि ना मक़्बूल होने का अन्देशा होता है अगर रियाकार आख़िर में रिया से तौबा करे तो इस पर रिया की इबादत की क़ज़ा वाजिब नहीं बल्कि इस तौबा की ब-र-कत से गुज़श्ता ना मक़्बूल इबादात भी क़बूल हो सकती हैं (और चूंकि) मुत्लक़न

1 ..... احیاء العلوم، کتاب ذم الجاہ والریاء، بیان ترک الطاعت...الخ، ۳/۳۹۵

2 ..... बहारे शरीअ़त, 3/636-637, ह़िस्सा :16

www.dawateislami.net

रिया से ख़ाली होना बहुत मुश्किल है (लिहाज़ा) कोई शख़्स रिया के अन्देशे से इबादात न छोड़े बल्कि रिया से बचने की दुआ करे।[1] बहरहाल नेक आ'माल तर्क न किये जाएं बल्कि उन में पाई जाने वाली बुराइयों को दूर किया जाए जो अज्रो सवाब में कमी या महरूमी का बाइस हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इख़्लास के साथ नेकियां करने और इन पर इस्तिक़ामत पाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अ़ता कर दे इख़्लास की मुझ को ने'मत
न नज़्दीक आए रिया या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

मुसन्निफ़ीन व शु-अ़रा का नाम व तख़ल्लुस इस्ति'माल करना

अ़र्ज़ : मुसन्निफ़ीन व मुअल्लिफ़ीन का अपनी कुतुब पर नाम लिखना, शु-अ़रा का अपने कलाम में तख़ल्लुस इस्ति'माल करना कैसा है ?

इर्शाद : मुसन्निफ़ या शाइ़र की शख़्सियात अगर इस क़दर मा'रूफ़ और मुस्तनद हो चुकी हो कि लोग किताब या कलाम में उस का नाम व तख़ल्लुस[2] देख कर ही उसे ले लेंगे और पढ़ेंगे तो अब दीनी फ़वाइद के पेशे नज़र अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ

---

1 ..... मिरआतुल मनाजीह़, 7/127

2 ..... तख़ल्लुस की ता'रीफ़ : शाइ़र का वोह मुख़्तसर नाम जो वोह अपने अश्आ़र में इस्ति'माल करता है। (फ़ीरोज़ुल्लुग़ात)

www.dawateislami.net

अपना नाम व तख़ल्लुस इस्ति'माल करने में कोई ह़रज नहीं जैसे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की शख़्सिय्यत है कि आप का नाम व तख़ल्लुस जिस किताब या कलाम में हो उसे क़बूलिय्यत के बारह चांद लगा देता है और अगर आप का नाम व तख़ल्लुस निकाल दिया जाए तो शायद बहुत से लोग न पढ़ें ।[1] मुसन्निफ़ या शाइ़र इस मक़ाम पर पहुंचने के बा'द भी नाम डालते वक़्त एक सो एक बार अपनी निय्यत पर ग़ौर कर ले कि कहीं ऐसा न हो कि अ़वाम का भला करते करते ख़ुद रियाकारी के अ़मीक़ गढ़े में जा पड़े । ह़दीसे पाक में है : लोगों में सब से बड़ा बद बख़्त वोह शख़्स है जो ग़ैर की दुन्या के लिये अपनी आख़िरत ख़राब कर दे ।[2]

अगर कोई मुसन्निफ़ या शाइ़र इस क़दर मश्हूरो मा'रूफ़ नहीं और न ही उस के नाम के सबब किताब लेने और पढ़ने वालों की ता'दाद में कोई इज़ाफ़ा मुम्किन है तो उसे ख़ूब ग़ौर कर लेना

1..... शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शख़्सिय्यत भी ऐसी है कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का नाम जिस किताब या रिसाले पर होता है तो उसे क़बूलिय्यत के बारह चांद लगा देता है, लोग उसे हाथों हाथ लेते और उस का मुत़ा-लआ़ करते हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तह़रीर कर्दा कुतुबो रसाइल पढ़ कर लाखों लाख लोगों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो चुका है । (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

2..... شُعب الایمان، باب فی اخلاص العمل لله وترک الریاء، ۵/۳۲۵، حدیث: ۶۹۳۸

www.dawateislami.net

चाहिये कि कौन सा जज़्बा उसे नाम व तख़ल्लुस लिखने पर उभार रहा है ? बिग़ैर नाम व तख़ल्लुस के किताब व कलाम छापने पर क़ल्बी सदमा क्यूं हो रहा है ? अगर उस का अपनी तह़रीर या कलाम से मक़्सूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और लोगों की इस्लाह़ करना है तो वोह बिग़ैर नाम व तख़ल्लुस के भी हो सकती है, अलबत्ता यहां येह याद रखें कि नाम लिखने में बहुत सी अच्छी निय्यतें हो सकती हैं, हम अपने अ़मल पर ग़ौर करें, दूसरों पर बद गुमानी न करें कि येह ह़राम है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इख़्लास की दौलत से मालामाल फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुसन्निफ़ और ना'त ख़्वां रियाकारी से कैसे बचें ?

अ़र्ज़ : मुसन्निफ़, कॉलिम निगार, शाइ़र और ना'त ख़्वां रियाकारी से कैसे बचें ?

इर्शाद : मुसन्निफ़ हो या कॉलिम निगार, शाइ़र हो या ना'त ख़्वां, आ़म हो या ख़ास सभी को चाहिये कि रियाकारी से बचने के लिये अपनी निय्यतों को दुरुस्त रखें। हर क़ौल व फ़े'ल से पहले ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र करने की आ़दत बनाएं कि इस से उस का मक़्सद क्या है ? अगर उस में दिखावे की बू पाएं तो फ़ौरन अपनी निय्यत की इस्लाह़ फ़रमाएं और येह ज़ेह्न बनाएं कि बारगाहे इलाही में वोही अ़मल मक़्बूल होता है जो फ़क़त़ रिज़ाए इलाही के लिये किया जाता है। लोगों को दिखाने या सुनाने की ख़ातिर

www.dawateislami.net

किये गए नेक अ़मल का क़बूल होना तो एक त़रफ़ रहा उलटा अ़ज़ाबे जहन्नम का बाइ़स हो सकता है। इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करने की आ़दत बनाने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की तह़रीर व तक़रीर बल्कि हर क़ौल व फ़े'ल रियाकारी की आफ़त से दूर और इख़्लास की दौलत से मा'मूर हो जाएगा।

अगर आप अपनी तह़रीर के ज़रीए़ मुसल्मानों की इस्लाह़ करना चाहते हैं तो इस के लिये नर्म व हमदर्दाना और मस्लह़त भरा अन्दाज़ अपनाने की कोशिश कीजिये, तह़रीर में हरगिज़ ऐसे अल्फ़ाज़ इस्ति'माल न कीजिये जिन से अपनी बढ़ाई और ख़ुद सिताई का इज़्हार हो म-सलन "इस मौज़ूअ़ पर मेरी तह़रीर ह़र्फ़े आख़िर है, मैं ने इस तह़रीर में हज़ारों कुतुब का निचोड़ आप के सामने रख दिया है, मेरी येह किताब आप को दीगर कुतुब से बे नियाज़ कर देगी" वग़ैरा। याद रखिये ! अगर कोई इस अन्दाज़ से इ़ज़्ज़त कमाना या अ़वाम में अपनी इ़ल्मिय्यत का लोहा मनवाना चाहे तो येह उस की भूल है क्यूं कि लोग ऐसे मुसन्निफ़ीन को बिल्कुल पसन्द नहीं करते। बहरह़ाल अगर किसी की तह़रीर में इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ पाएं ख़ुसूसन मा'रूफ़ उ-लमा और बुज़ुर्गाने दीन की किताबों में तो उन के बारे में अपने दिल में हरगिज़ हरगिज़ बद गुमानी न लाएं क्यूं कि आ'माल का दारो मदार निय्यत पर है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर एक की निय्यत व इरादे से बा ख़बर है।

www.dawateislami.net

इस्लाह़ करने का बेहतरीन त़रीक़ा

अगर आप अपनी तह़रीर के ज़रीए़ किसी ग़-लत़ी करने वाले की इस्लाह़ करना चाहते हैं तो इस का बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि आप पहले बिल मुशाफ़ा (बराहे रास्त) तन्हाई में उस से राबित़ा कीजिये और नरमी से उसे समझाइये कि सब के सामने इस्लाह़ करना गोया उसे ज़लीलो रुस्वा करना है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जिस ने अपने भाई को सब के सामने नसीह़त की उस ने उस को ज़लील कर दिया और जिस ने तन्हाई में नसीह़त की उस ने उस को मुज़य्यन (आरास्ता) कर दिया ।[1] अगर आप पहले राबित़ा करने के बजाए उस का रद लिख कर छाप दें और फिर उस से तौबा का मुत़ा-लबा करें तो इस त़रह़ क़बूले ह़क़ के इम्कानात बहुत कम होते हैं । इस त़रह़ सामने वाला इस्लाह़ क़बूल करने के बजाए मुक़ाबले पर उतर आता है लिहाज़ा मुसन्निफ़ीन और कॉलिम निगारों को चाहिये कि अपनी तह़रीर में ख़ुलूसे निय्यत के साथ ह़िक्मत भरा अन्दाज़ अपनाते हुए ख़ुद को रियाकारी, ख़ुद सिताई और हुब्बे जाह से बचाने की कोशिश करें ।

इसी त़रह़ ना'त ख़्वां इस्लामी भाइयों को अच्छी आवाज़ के साथ साथ अगर भरपूर इख़्लास की दौलत भी मुयस्सर आ जाए तो सोने पे सुहागा है । आजकल ना'त ख़्वानी जैसे मुक़द्दस काम

1 ..... تنبیہ الغافلین ، باب الامر بالمعروف والنھی عن المنکر ، ص ۴۹

www.dawateislami.net

को भी बा'ज़ ना'त ख़्वानों ने महज़ एक रस्म और कमाई का ज़रीआ़ बना लिया है। अगर उन्हें कोई मालदार, सरमाया दार दा'वत दे तो वहां सर के बल पहुंचने की कोशिश करते हैं। दौराने ना'त जूं जूं नोटों की बरसात होती है तो वोह मचलने लगते हैं, उन पर वज्द की सी कैफ़िय्यत त़ारी होने लगती है, अश्आ़र का तक्रार होने लगते है, कभी कोई शे'र सेठ साहि़ब की नज़्र करते हैं तो कभी ह़ाजी साहि़ब की अल ग़रज़ उन का माईक छोड़ने को जी नहीं चाहता। अगर कोई ग़रीब व नादार, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का आ़शिक़े ज़ार अपने घर में मह़फ़िले ना'त का एहतिमाम करे और उन्हें बुलाए तो उन के पास वक़्त ही नहीं होता, मु-तअ़द्दिद मह़ाफ़िल में शिर्कत की वज्ह से उन्हें थकावट भी हो जाती है और मुसल्सल ना'तें पढ़ ने के सबब गला भी ख़राब हो चुका होता है। ऐसे ना'त ख़्वानों को ग़ौर करना चाहिये कि क्या इसी का नाम इख़्लास है ? क्या इसी को इ़श्क़े रसूल कहते हैं ? अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये ना'तें पढ़नी हैं तो अमीर व ग़रीब के हां जाने में फ़र्क़ क्यूं ? बड़ी मह़फ़िल और घर की मह़फ़िल में ना'त पढ़ने के अन्दाज़ में फ़र्क़ क्यूं ? रिज़ाए इलाही तो इन चीज़ों के बिग़ैर भी ह़ासिल हो सकती है बल्कि मज़ा तो इसी में है कि कोई आए या न आए, ईको साउन्ड हो या न हो, आप ना'त पढ़े जा रहे हों। शहन्शाहे सुख़न, उस्तादे ज़मन मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

दिल में हो याद तेरी गोशए तन्हाई हो
फिर तो ख़ल्वत में अ़जब अन्जुमन आराई हो

(ज़ौक़े ना'त)

अपने इ़ल्म, हुनर और फ़न को ज़ाहिर करना कैसा ?

अ़र्ज़ : क्या नेकियों की त़रह़ इ़ल्म, हुनर, फ़न, सलाहिय्यत, दौलत और ओ़हदे वग़ैरा को भी छुपाना चाहिये ?

इर्शाद : कोई इ़ल्म हो या फ़न, हुनर हो या सलाहिय्यत, दौलत हो या ओ़हदा येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें हैं । इन्हें लोगों के सामने ज़ाहिर करने और पोशीदा रखने की दो सूरतें हो सकती हैं । अगर वाक़ेई इन चीज़ों को ज़ाहिर करने की ह़ाजत है तो ज़ाहिर कर सकते हैं म-सलन अगर कोई शख़्स आ़लिम है और वहां पर बद मज़्हबिय्यत और फ़ितनों का ज़ुहूर हो रहा है तो अब उस आ़लिम पर फ़र्ज़ है कि वोह अपना इ़ल्म ज़ाहिर करे और उन फ़ितनों और बद मज़्हबिय्यत का सद्दे बाब करे अगर वोह ऐसा नहीं करेगा तो वोह वईदे शदीद का मुस्तह़िक़ होगा चुनान्चे मक्की म-दनी सुल्त़ान सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जब फ़ितने या फ़रमाया बद मज़्हबियां ज़ाहिर हों और मेरे सह़ाबा को बुरा कहा जाए तो आ़लिम को चाहिये कि वोह अपना इ़ल्म ज़ाहिर करे और जो ऐसा न करे तो उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़िरिश्तों और तमाम आदमियों की ला'नत,

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ न उस का फ़र्ज़ क़बूल करेगा और न ही नफ़्ल ।[1]

किल्के रज़ा है ख़न्जरे ख़ूंख़ार बर्क़-बार
आ'दा से कह दो ख़ैर मनाएं न शर करें

(ह़दाइके़ बख़्शिश)

आ़लिम का अपना इ़ल्म ज़ाहिर करने की सूरतें

शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़जर हैतमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : अगर कोई आ़लिम ऐसे शह्र में जाए जहां के रहने वाले लोग उस के इ़ल्म और इत़ाअ़त को न जानते हों तो उसे इस बात का इख़्तियार है कि उन के सामने इस निय्यत से अपना इ़ल्म व तक़्वा ज़ाहिर करे कि वोह लोग इसे क़बूल कर लें और इस से नफ़्अ़ उठाएं, इस की मिसाल ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام का वोह फ़रमान है जिसे पारह **13 सूरए यूसुफ़** की आयत नम्बर 55 में यूं बयान किया गया है :

قَالَ اجْعَلْنِیْ عَلٰی خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّیْ حَفِیْظٌ عَلِیْمٌ ﴿۵۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : यूसुफ़ ने कहा मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर कर दे बेशक मैं ह़िफ़ाज़त वाला इ़ल्म वाला हूं ।

इसी त़रह़ अगर कोई जाहिल या दुश्मनी रखने वाला उस के इ़ल्म का इन्कार कर दे तो उसे इस आयते मुबा-रका से इस्तिद्लाल करते हुए अपने इ़ल्म के बारे में बताने का इख़्तियार है ताकि

मदीना

1 ...... الجامع لاخلاق الراوی، باب اتخاذ المستملی، املاء فضائل الصحابة... الخ، ص ۳۵۷، حدیث: ۱۳۵۲

www.dawateislami.net

उस दुश्मनी रखने वाले की नाक ख़ाक आलूद हो जाए और लोग उसे क़बूल करते हुए उस के उ़लूम से नफ़्अ़ उठाएं।[1]

अगर कोई ऐसी सूरत न हो तो फिर बिला वज्ह अपने इ़ल्मो फ़ज़्ल का इज़्हार न किया जाए, म-सलन मैं आ़लिम व फ़ाज़िल हूं, मैं भी फ़ुलां शैख़ुल ह़दीस साह़िब का शागिर्द हूं, हम ने भी उ़-लमा के जूते सीधे किये हैं वग़ैरा कि इस से हुब्बे जाह, रियाकारी और ग़ुरूर व तकब्बुर में पड़ जाने का अन्देशा रहता है येही मुआ़-मला हुनर, फ़न, सलाह़िय्यत, दौलत, ओ़ह्दे वग़ैरा के इज़्हार का भी है। अगर इन चीज़ों के इज़्हार की कोई ख़ास ज़रूरत व ह़ाजत नहीं तो फिर बिला वज्ह इन को ज़ाहिर न किया जाए कि इस से ख़ुद सिताई, हुब्बे जाह और दीगर कई बाति़नी अमराज़ की गुनाह वाली सूरतों में मुब्तला होने का अन्देशा है बिला ज़रूरत ने'मतों के इज़्हार से वैसे भी बचने की कोशिश करनी चाहिये ताकि इन ने'मतों की ह़िफ़ाज़त हो और ह़ासिदीन से बचा जा सके। ह़दीसे पाक में है : तुम पर अपनी ने'मतों को पोशीदा रखना लाज़िम है (ह़सद से बचने के लिये) क्यूं कि हर ज़ी ने'मत पर ह़सद किया जाता है।[2]

डोक्टर, सर्जन, इन्जीनियर और प्रोफ़ेसर

अ़र्ज़ : डॉक्टर, सर्जन, इन्जीनियर और प्रोफ़ेसर वग़ैरा किस त़रह़ ता'रीफ़ और शोहरत की मह़ब्बत से बच सकते हैं ?

इर्शाद : डॉक्टर, सर्जन, इन्जीनियर और प्रोफ़ेसर वग़ैरा ह़ज़रात में

مدینہ

1 ...... الزواجر، الباب الاوّل فی الکبائر...الخ، الکبیرۃ السادسۃ والاربعون...الخ، ۱/۲۰۲-۲۰۳

2 ......روح البیان، پ۳۰، الضحی، تحت الآیۃ:۱۱، ۱۰/۴۵۹

www.dawateislami.net

उ़मूमन हुब्बे जाह का ग़-लबा होता है। अगर कोई दूसरा उन की ता'रीफ़ करे तो बहुत ख़ूब वरना येह बेचारे ख़ुद अपने कारनामे बयान करना शुरूअ़ कर देते हैं म-सलन अगर कोई डॉक्टर है तो कहेगा फ़ुलां मरीज़ इतने डॉक्टरों के पास गया, कहीं इफ़ाक़ा न हुवा बिल आख़िर मेरे पास आया तो दो दिन में ठीक हो गया। फ़ुलां मरीज़ ला इ़लाज[1] था मगर मेरी दवा से चन्द दिनों में उस की बीमारी रफ़्अ़ दफ़्अ़ हो गई। येही मुआ़-मला सर्जन का है येह अपनी ता'रीफ़ में यूं गोया होता है कि एक मरीज़ का केस फ़ुलां सर्जन ने ख़राब कर दिया था, मरीज़ बेचारा शिद्दते दर्द से तड़प रहा था, लोग उसे मेरे पास ले आए, मैं ने ऑपरेशन किया तो काम्याब हो गया, अब वोह मरीज़ चलता फिरता है।[2] अगर डिस्पेन्सर है और शरअ़न इ़लाज करने का अह्ल नहीं तो येह भी इस मुआ़-मले में किसी से कम नहीं, इस को भी मौक़अ़ मिले

---

❶..... किसी बीमारी को इस मा'ना में ला इ़लाज क़रार देना शरअ़न दुरुस्त नहीं कि उस का इ़लाज ही न हो क्यूं कि मौत के सिवा कोई भी ऐसी बीमारी नहीं जिस की दवा न हो जैसा कि ह़दीसे पाक में है : हर बीमारी की दवा है, जब दवा बीमारी तक पहुंचा दी जाती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से मरीज़ अच्छा हो जाता है। (مسلم، کتاب السلام، باب لکل داء دواء...الخ، ص۱۲۱۰، حدیث:۲۲۰۴) हां ! येह बात अलग है कि कई अमराज़ का इ़लाज अतिब्बा अब तक दरयाफ़्त नहीं कर पाए।

(शो'बए फ़ैज़ान म-दनी मुज़ा-करा)

❷..... बिला ह़ाजते शर-ई किसी की ख़ामी या कमज़ोरी दूसरे के आगे बयान करना ग़ीबत व गुनाह है, अलबत्ता बा'ज़ डॉक्टर और सर्जन बद उ़न्वान भी होते हैं, अगर ऐसे डॉक्टरों और सर्जनों से किसी मरीज़ को बचाना मक़्सूद हो तो इस निय्यत से उन की कमज़ोरी या ख़ामी सिर्फ़ उस के आगे बयान करना जिसे बताने में मस्लह़त हो तो इस सूरत में बताने वाला गुनहगार नहीं। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

तो अपने आप को डॉक्टर लिखने और कहने से नहीं चूकता।[1] **इन्जीनियर** और प्रोफ़ेसर ह़ज़रात भी बद क़िस्मती से इसी ज़ुमरे में आते हैं। अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना हुब्बे जाह की नुहूसत आ़म होती जा रही है, अपनी ता'रीफ़ की ख़्वाहिश तो हर एक को होती है मगर इन लोगों में येह चीज़ ज़ियादा पाई जाती है। अपना नाम भी डॉक्टर, सर्जन, इन्जीनियर और प्रोफ़ेसर कहे बिग़ैर नहीं लेते। इन सब को चाहिये कि जहां ओ़हदा ज़ाहिर करने की ज़रूरत व ह़ाजत न हो तो वहां बिला वज्ह इस का इज़्हार न करें, अपनी वाह वाह कराने के लिये अपनी ता'रीफ़ें और दूसरों की ख़ामियां बयान कर के उन की तज़्लील न करें। येह चन्द बातें उ़मूमी ए'तिबार से अ़र्ज़ की गई हैं, हर एक ऐसा हो येह ज़रूरी नहीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक और मुख़्लिस बन्दे भी इस धरती पर मौजूद हैं।

सादा लिबास पहनने की फ़ज़ीलत

अ़र्ज़ : बा'ज़ लोग दौलत मन्द होने के बा वुजूद आ़म सा लिबास पहनते हैं उन के लिये क्या हुक्म है ?

इर्शाद : अगर कोई शख़्स बत़ौरे आ़जिज़ी व इन्किसारी सादा लिबास पहनता है तो येह क़ाबिले ता'रीफ़ है। यक़ीनन वोह लोग ख़ुश

---

1 ..... इन्सान जिस वस्फ़ का अह्ल न हो उस वस्फ़ से अपनी ता'रीफ़ करना या सुनना पसन्द करना मज़्मूम सिफ़त और ह़राम है। आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : अगर कोई अपनी झूटी ता'रीफ़ को दोस्त रखे कि लोग उन फ़ज़ाइल से इस की सना करें जो इस में नहीं जब तो सरीह़ ह़रामे क़त़ई है। (फ़तावा र-ज़विय्या, 21/597)

www.dawateislami.net

नसीब हैं जो उ़म्दा लिबास पहनने की ता़क़त रखने के बा वुजूद महू़ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आ़जिज़ी व इन्किसारी इख़्तियार करते हुए सादा लिबास पहनते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उन को जन्नती लिबास पहनाएगा चुनान्चे ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : जो बा वुजूदे क़ुदरत अच्छे कपड़े पहनना, तवाज़ोअ़ (आ़जिज़ी) के त़ौर पर छोड़ देगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे करामत का हुल्ला (या'नी जन्नती लिबास) पहनाएगा।[1]

अगर कोई उ़म्दा लिबास इस निय्यत से पहने कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत का इ़ज़्हार हो तो येह भी जाइ़ज़ है कि शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने इस से मन्अ़ नहीं फ़रमाया बल्कि इस को पसन्द फ़रमाया है चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़रह़त निशान है : बेशक **अल्लाह** तआ़ला येह बात पसन्द फ़रमाता है कि बन्दे पर उस की ने'मत का असर दिखाई दे।[2]

लिबासे शोहरत बाइ़से ज़िल्लत

हां ! अगर कोई उ़म्दा लिबास या इन्तिहाई सादा लिबास इस निय्यत से पहने कि लोग उस को मालदार या सादगी का शाहकार जानें, उस की ता'रीफ़ करें और उस की इ़ज़्ज़तो तक्रीम

مدینہ

1 ..... ابو داود، کتاب الادب، باب من کظم غیظا، ۴/۳۲۶، حدیث: ۴۷۷۸

2 ..... مستدرک حاکم، کتاب الاطعمة، ان اللہ تعالی یحب... الخ، ۵/۱۸۵، حدیث: ۷۲۷۰

www.dawateislami.net

बजा लाएं तो इस सूरत में ऐसा लिबास पहनने की मुमा-न-अ़त है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जिस ने (दुन्या में) शोहरत का लिबास पहना, क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को ज़िल्लत का लिबास पहनाएगा ।[1]

लिबासे शोहरत से मुराद

इस ह़दीसे पाक के तह़्त सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : लिबासे शोहरत से मुराद येह है कि तकब्बुर के त़ौर पर अच्छे कपड़े पहने या जो शख़्स दरवेश न हो वोह ऐसे कपड़े पहने जिस से लोग उसे दरवेश समझें या आ़लिम न हो और उ़-लमा के से कपड़े पहन कर लोगों के सामने अपना आ़लिम होना जताता है या'नी कपड़े से मक़्सूद किसी ख़ूबी का इज़्हार हो ।[2] मा'लूम हुवा कि अच्छी निय्यत से नया और उ़म्दा लिबास पहनना और दिल में फ़रह़त मह़सूस करना शरअ़न मज़्मूम नहीं कि येह एक फ़ित़री अ़मल है । हां ! नुमूदो नुमाइश की निय्यत से नया और उ़म्दा लिबास पहनना और फिर दूसरों पर इस का इज़्हार करना ख़ुद-नुमाई वग़ैरा आफ़ात में मुब्तला होने की वज्ह से मन्अ़ है ।

❶..... ابنِ ماجه، کتاب اللباس، باب من لبس شهرة من الثياب، ۴/۱۶۳، حديث: ۳۶۰۶
❷..... बहारे शरीअ़त, 3/404, ह़िस्सा : 16

www.dawateislami.net

कलफ़-दार लिबास का इस्ति 'माल

अ़र्ज़ : क्या इस्त्री किये और कलफ़-दार लिबास पहनने से भी बड़ाई का इज़्हार होता है ? नीज़ कलफ़दार लिबास पहनने वाला क्या निय्यत करे ?

इर्शाद : जी हां ! इस्त्री किये हुए और कलफ़-दार लिबास पहनने से भी बड़ाई का इज़्हार हो सकता है वोह यूं कि अगर कोई ऐसा लिबास पहन कर लोगों के सामने फ़ख़्रिया अन्दाज़ में चले, अपने लिबास की ता'रीफ़ करे या दूसरों से अपने लिबास की ता'रीफ़ सुनने और अच्छी जगह पर बैठने की ख़्वाहिश करे तो येह तकब्बुर या फ़ख़्र की अ़लामात हो सकती हैं जिन से बचना चाहिये, हां ! अगर येह कैफ़िय्यात न हों तो फिर ऐसा लिबास पहनने में ह़रज नहीं चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द सिवुम सफ़ह़ा 409 पर है : इतना लिबास जिस से सित्रे औ़रत हो जाए और गरमी सरदी की तक्लीफ़ से बचे फ़र्ज़ है और इस से ज़ाइद जिस से ज़ीनत मक़्सूद हो और येह कि जब कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने दिया है तो उस की ने'मत का इज़्हार किया जाए येह मुस्तह़ब है, ख़ास मौक़अ़ पर म-सलन जुमुआ़ या ईद के दिन उ़म्दा कपड़े पहनना मुबाह़ है। इस क़िस्म के कपड़े रोज़ न पहने क्यूं कि हो सकता है कि इतराने

www.dawateislami.net

लगे और ग़रीबों को जिन के पास ऐसे कपड़े नहीं हैं नज़रे हक़ारत से देखे लिहाज़ा इस से बचना ही चाहिये और तकब्बुर के तौर पर जो लिबास हो वोह मम्नूअ़ है, तकब्बुर है या नहीं इस की शनाख़्त यूं करे कि इन कपड़ों के पहनने से पहले अपनी जो हालत पाता था अगर पहनने के बा'द भी वोही हालत है तो मा'लूम हुवा कि इन कपड़ों से तकब्बुर पैदा नहीं हुवा। अगर वोही हालत अब बाक़ी नहीं रही तो तकब्बुर आ गया लिहाज़ा ऐसे कपड़े से बचे कि तकब्बुर बहुत बुरी सिफ़त है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि अच्छा और उ़म्दा लिबास पहनने में कोई ह़रज नहीं जब कि कोई बुरी निय्यत न हो लिहाज़ा जब भी अच्छा और उ़म्दा लिबास पहनें तो बुरी निय्यत से बचते हुए कोई न कोई अच्छी निय्यत ज़रूर कर लीजिये ताकि येह लिबास पहनना भी कारे सवाब बन जाए, म-सलन येह निय्यत कर लीजिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को येह पसन्द है कि उस की ने'मत का असर बन्दे पर ज़ाहिर हो इस लिये मैं अच्छा और उ़म्दा लिबास पहन रहा हूं, ऐसे ही जुमुआ़, ईदैन या किसी और ख़ास दीनी मौक़अ़ पर पहनते वक़्त इन दिनों की अ़ज़मत और शआ़इरे इस्लाम की ता'ज़ीम की निय्यत कर लीजिये।

लिबास सुन्नतों से मुज़य्यन रहे और
इमामा हो सर पर सजा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

www.dawateislami.net

ख़ुश्बू लगाने में अच्छी निय्यत की सूरत

अ़र्ज़ : ख़ुश्बू लगाना कैसा है ? नीज़ ख़ुश्बू लगाते वक़्त अच्छी निय्यत कैसे की जाए ?

इर्शाद : ख़ुश्बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत में से एक बहुत ही प्यारी ने'मत है लिहाज़ा अच्छी निय्यत से इस का इस्ति'माल किया जाए। याद रखिये ! बिग़ैर किसी निय्यत के इस का इस्ति'माल मुबाह़ (या'नी न सवाब न गुनाह) है मगर अच्छी अच्छी निय्यतों से येह मुबाह़ काम भी अज्रो सवाब का ज़रीआ़ बन सकता है जैसा कि मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़, शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی लिखते हैं : मुबाह़ कामों में भी अच्छी निय्यत करने से सवाब मिलेगा, म-सलन ख़ुश्बू लगाने में इत्तिबाए़ सुन्नत, ता'ज़ीमे मस्जिद, फ़रह़ते दिमाग़ (दिमाग़ की ताज़गी) और अपने मुसल्मान भाइयों से ना पसन्दीदा बू दूर करने की निय्यतें हों तो हर निय्यत का अलग सवाब मिलेगा।[1]

ख़ुश्बू लगाने की निय्यतें

ख़ुश्बू लगाने से क़ब्ल अपने आप को रियाकारी से बचाने और इख़्लास पाने के लिये ह़स्बे ह़ाल अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये बिल ख़ुसूस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और इत्तिबाए़ सुन्नत की निय्यत ज़रूर होनी चाहिये। इस के इ़लावा येह

مدینہ

1 ...... أشعةُ اللمعات، ۱/ ۳۷

www.dawateislami.net

निय्यतें भी की जा सकती हैं म-सलन बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर लगाऊंगा, मुसल्मानों और फ़िरिश्तों को ख़ुश्बू से फ़रह़त (या'नी ख़ुशी व सुरूर) पहुंचाऊंगा, ख़ुद से बदबू दूर कर के मुसल्मानों को ग़ीबत से बचाऊंगा, नमाज़ के लिये ज़ीनत ह़ासिल करूंगा, ख़ुश्बू सूंघ कर दुरूद शरीफ़ पढ़ूंगा, ख़ुश्बू इस्ति'माल करने के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाते हुए اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहूंगा वग़ैरा वग़ैरा।

दुन्या पसन्द करती है इत्रे गुलाब को
लेकिन मुझे नबी का पसीना पसन्द है

मुर्दार से भी ज़ियादा बदबूदार ख़ुश्बू

अगर किसी बुरी निय्यत म-सलन लोगों के सामने इतराने या ग़ैर औ़रतों को अपनी त़रफ़ मु-तवज्जेह करने की निय्यत से ख़ुश्बू लगाई तो ऐसा शख़्स गुनहगार होगा और वोह ख़ुश्बू भी बरोज़े क़ियामत मुर्दार से ज़ियादा बदबूदार होगी चुनान्चे मक्की म-दनी सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये ख़ुश्बू लगाई क़ियामत के दिन वोह इस ह़ाल में आएगा कि उस की महक कस्तूरी से भी ज़ियादा ख़ुश्बूदार होगी और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और के लिये ख़ुश्बू लगाई तो बरोज़े क़ियामत इस त़रह़ आएगा कि उस की बू मुर्दार से भी ज़ियादा बदबूदार होगी।[1]

مدینہ

1 ..... مصنّف عبد الرزاق، کتاب الصیام، باب المرأۃ تصلی...الخ، ۴/ ۲۴۷، حدیث: ۷۹۶۳

www.dawateislami.net

इस्लामी बहनों के लिये ख़ुश्बू लगाने का मस्अला

इस्लामी बहनें भी अपने घर की चार दीवारी में जहां फ़क़त शोहर या महारिम हों वहां हर त़रह़ की ख़ुश्बू इस्ति'माल कर सकती हैं। हां ! येह एह़तियात़ लाज़िमी है कि देवर, जेठ और दीगर ग़ैर महारिम तक ख़ुश्बू न पहुंचे। अगर घर से बाहर जाएं तो महक वाली ख़ुश्बू हरगिज़ न लगाएं जो ग़ैर मर्दों की तवज्जोह का बाइस बने कि औरत के लिये ऐसी ख़ुश्बू लगाने पर वईदे शदीद है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत : जब कोई औरत ख़ुश्बू लगा कर लोगों में निकलती है ता कि उस की ख़ुश्बू पाई जाए तो येह औरत ज़ानिया है।[1]

क़ुरबानी करने में रियाकारी से कैसे बचें

अ़र्ज़ : क़ुरबानी करने में क्या निय्यत होनी चाहिये ? नीज़ क़ुरबानी करते वक़्त रियाकारी से कैसे बचा जाए ?

इर्शाद : मख़्सूस जानवर को मख़्सूस दिन में ब निय्यते तक़र्रुब (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने की निय्यत से) ज़ब्ह़ करना क़ुरबानी है।[2] क़ुरबानी की इस ता'रीफ़ से ही वाज़ेह़ है कि क़ुरबानी महज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने की निय्यत से की जाए। अगर किसी ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के इलावा लोगों को दिखाने और अपनी ता'रीफ़ करवाने की ग़रज़

---

1 ..... نسائی، کتاب الزینۃ، باب ما یکرہ للنساء من الطیب، ص۸۱۸، حدیث: ۵۱۳۶

2 ..... बहारे शरीअ़त, 3/327, ह़िस्सा : 15

www.dawateislami.net

से क़ुरबानी की तो ऐसी क़ुरबानी बारगाहे इलाही में मक़्बूल नहीं। क़ुरबानी करने वाले सिर्फ़ निय्यत के इख़्लास और दिलों की परहेज़ गारी की रिआ़यत से ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को राज़ी कर सकते हैं क्यूं कि बारगाहे इलाही में क़ुरबानी के जानवरों का गोश्त पहुंचता है न उन का ख़ून बल्कि तक़्वा व परहेज़ गारी ही ऐसी चीज़ है जो बारगाहे इलाही तक बारयाब होती है जैसा कि पारह 17 **सू-रतुल ह़ज्ज** की आयत नम्बर 37 में इर्शाद होता है :

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमाान : अल्लाह को हरगिज़ न उन के गोश्त पहुंचते हैं न उन के ख़ून हां तुम्हारी परहेज़ गारी उस तक बारयाब होती है।

लिहाज़ा रियाकारी से बचते हुए ख़ुलूसे निय्यत के साथ क़ुरबानी का एहतिमाम करना चाहिये। बिला ह़ाजत दूसरों को अपने जानवर की क़ीमत बताने, ख़ूबियां सुनाने, नुमाइश के तौ़र पर गलियों में घुमाने और लोगों से इस की ता'रीफ़ सुन कर ख़ुशी से फूले न समाने से बचने की हर दम कोशिश करनी चाहिये और अगर रियाकारी या हुब्बे जाह का अन्देशा महसूस हो तो उस के लिये क़ुरबानी के जानवर को चौराहे में बांधने के बजाए मवेशियों के बाड़े में या घर के किसी कोने में बांधिये ताकि वोह ह़त्तल इम्कान लोगों की नज़रों से पोशीदा रहे। ज़ब्ह़ करते वक़्त भी अपने इख़्लास को क़ाइम रखते हुए ख़्वाह म ख़्वाह चरचा

www.dawateislami.net

करने से बचिये और बारगाहे इलाही में इख़्लास व तक़्वा की भीक मांगते रहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुत्तक़ी और परहेज़ गार लोगों की ही क़ुरबानी क़बूल फ़रमाता है चुनान्चे पारह 6 **सू-रतुल माइदह** की आयत नम्बर 27 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۲۷﴾ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** उसी से क़बूल करता है जिसे डर है।

हो अख़्लाक़ अच्छा हो किरदार सुथरा
मुझे मुत्तक़ी तू बना या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

हुब्बे जाह व मन्सब की ख़ातिर नेकियों का इज़्हार

अ़र्ज़ : हुब्बे जाह व मन्सब की ख़ातिर अपनी नेकियों का इज़्हार करना कैसा है ?

इर्शाद : हुब्बे जाह व मन्सब की ख़ातिर अपनी नेकियों का इज़्हार करना इन्तिहाई ख़तरनाक मुआ़-मला है कि इस से नेकियां ज़ाएअ़ हो जाती हैं। हमें चाहिये कि इस पर क़ाबू पाने के लिये अहादीसे मुबा-रका में वारिद इस के नुक़्सानात पर ग़ौर करें चुनान्चे ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए़ महशर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : उ-मरा के लिये हलाकत है, मन्सब चाहने वालों के लिये हलाकत है, ज़िम्मादारों के लिये हलाकत है, क़ियामत के दिन कुछ क़ौमें ज़रूर येह तमन्ना करेंगी कि उन की पेशानियां सुरय्या सितारे से मुअ़ल्लक़ होतीं और वोह ज़मीन व

www.dawateislami.net

आस्मान के दरमियान लटक रहे होते और उन्हें किसी काम का वाली न बनाया जाता ।[1]

इसी त़रह़ ''हुब्बे जाह'' की ख़ातिर नेकियों का इज़्हार करने वालों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिया है कि सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त को बन्दों की त़रफ़ से की जाने वाली ता'रीफ़ की मह़ब्बत के साथ मिलाने से बचते रहो । (ख़बरदार ! कहीं) तुम्हारे आ'माल बरबाद न हो जाएं ।[2]

नेक आ'माल को अकारत करने के लिये शैत़ान मुख़्तलिफ़ ह़र्बों से काम लेता है। कभी नेक कामों के ज़रीए इन्सान को हुब्बे जाह और शोहरत का वस्वसा दिलाता है तो कभी नुमूदो नुमाइश और ओ़हदा व मन्सब के ह़ुसूल का ख़्वाब दिखाता है तो यूं नादान इन्सान शैत़ान के वसाविस व फ़रेब में आ कर अपनी इबादात को ज़ाएअ़ कर बैठता है । याद रखिये ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगह में वोही आ'माल क़बूल होते हैं जो फ़क़त उस की रिज़ा के लिये किये जाएं । मह्ज़ लोगों को दिखाने और अपनी वाह वाह करवाने की निय्यत से पहाड़ों के बराबर भी किये जाने वाले आ'माल बारगाहे इलाही में क़बूल नहीं होते जैसा कि मन्क़ूल है कि बनी इसराईल के एक आ़बिद (या'नी इबादत करने वाले) ने एक ग़ार में चालीस बरस तक

1 ..... مستدرک حاکم، کتاب الاحکام، قاضیان فی النار...الخ، ۵/۱۲۳، حدیث: ۷۰۹۹

2 ..... فِرْدَوسُ الْاَخبار، باب الالف، فصل فی التحریر والوعید، ۱/۲۲۳، حدیث: ۱۵۶۷

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला की इ़बादत की । फ़िरिश्ते उस के आ'माल ले कर आसमानों पर जाते और वोह क़बूल न किये जाते । फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की : ऐ हमारे परवर दगार ! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! हम ने तेरी त़रफ़ सह़ीह़ (आ'माल) उठाए हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! तुम ने सच कहा, मगर (इ़बादत में उस की निय्यत बुरी होती है) वोह चाहता है कि उस का मक़ाम (सब को) मा'लूम हो जाए (या'नी रिया व शोहरत का त़लब गार है) ।[1]

एक ह़र्फ़ का सवाब जाता रहा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि नेक आ'माल के ज़रीए़ अपनी शोहरत त़लब करने वाले के चालीस साल के नेक आ'माल अकारत हो गए । लरज़ जाइये और ख़ुदाए अ़लीम व ख़बीर عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्ची तौबा करते हुए अपने आ'माल को ज़ेवरे इख़्लास से मुज़य्यन करने की कोशिश कीजिये । याद रखिये ! अगर किसी ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अ़मल शुरूअ़ किया फिर दौराने अ़मल अगर उस में रियाकारी आ गई तो जिस क़दर रियाकारी हुई उसी क़दर सवाब से मह़रूमी है इस ज़िम्न में एक ह़िकायत मुला-ह़ज़ा कीजिये चुनान्चे तफ़्सीरे रूह़ुल बयान में है : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरा घर रास्ते में था एक रात मैं ने स-ह़री के वक़्त उठ कर घर के बालाख़ाने में **सूरए त़ाहा** की तिलावत की, जब मैं ने इस सूरत को ख़त्म किया तो थोड़ी देर के लिये वहीं सो

1 ..... قوتُ القلوب، کتاب الزکوۃ، الباب السابع والثلاثون، ۲/۳۰۴

www.dawateislami.net

गया। ख़्वाब में मैं ने आस्मान से एक शख़्स को उतरते देखा कि उस के हाथ में एक सहीफ़ा है, उस ने वोह सहीफ़ा मेरे सामने खोला तो उस में **सूरए ताहा** थी और हर हर्फ़ के नीचे दस दस नेकियां लिखी हुई थीं सिवाए एक हर्फ़ के। मैं ने उस हर्फ़ को देखा कि वोह अपनी जगह से मिटा हुवा है और उस के नीचे कोई नेकी भी दर्ज नहीं, मैं ने कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने येह हर्फ़ भी पढ़ा था लेकिन इस हर्फ़ का न मुझे सवाब मिला है और न ही येह हर्फ़ नामए आ'माल में लिखा गया है। तो उस शख़्स ने कहा तूने सच कहा, तूने इस हर्फ़ को पढ़ा है और हम ने इसे लिखा भी था मगर हम ने अर्श से एक मुनादी को निदा करते सुना कि इस हर्फ़ को मिटा दो और इस का सवाब भी ख़त्म कर दो हम ने इस को मिटा दिया। वोह बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं ख़्वाब में रोने लगा और कहने लगा कि तुम ने येह मुआ-मला क्यूं किया ? तो उस शख़्स ने कहा : दौराने तिलावत तेरे सामने एक शख़्स का गुज़र हुवा और तूने उस को सुनान के लिये येह हर्फ़ ज़ोर से पढ़ा था इस लिये इस का सवाब जाता रहा।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने आ'माल लोगों को दिखाने, सुनाने और शोहरत पाने की ख़्वाहिश दिल से यक्सर निकाल दीजिये कि इस ख़स्लते बद की वज्ह से नेक आ'माल में सवाब से महरूमी के साथ साथ दीनो ईमान की तबाही और दो जहां में ज़िल्लतो रुस्वाई का भी अन्देशा है। हज़रते

مدینہ

1 ..... روح البیان، پ۱۰، الانفال، تحت الآیۃ: ۴۷، ۳/۳۵۵

www.dawateislami.net

सय्यिदुना बिश्र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر फ़रमाते हैं : मैं किसी ऐसे शख़्स को नहीं जानता जो शोहरत चाहता हो और उस का दीन तबाह और वोह ख़ुद ज़लीलो रुस्वा न हुवा हो।[1] येही वज्ह है कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن अपनी शोहरत के ख़ौफ़ से बहुत सी हिक्मत भरी, नसीहत आमेज़ और नफ़्अ़ बख़्श बातें भी अपनी ज़बान पर न लाते थे जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं ने कुछ लोगों की सोह़बत इख़्तियार की और उन के दिलों में हिक्मत की ऐसी बातें गुज़रती थीं कि अगर वोह उन्हें ज़बान पर लाते तो उन को और उन के साथियों को नफ़्अ़ देतीं मगर उन्हों ने शोहरत के ख़ौफ़ से उन बातों को ज़ाहिर नहीं किया और उन में से कोई एक रास्ते में अज़िय्यत देने वाली चीज़ देखता तो उस को सिर्फ़ इस लिये न हटाता कि कहीं शोहरत न हो जाए।[2]

ख़्वाह दौलत न दे कोई सरवत न दे
चाहे इ़ज़्ज़त न दे कोई शोहरत न दे
तख़्ते शाही न दे और ह़ुकूमत न दे
तुझ से अ़त्तार तेरा त़लब गार है

(वसइले बख़्शिश)

बुज़ुर्गाने दीन की शोहरत की वज्ह

अ़र्ज़ : हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن जब सरापा इख़्लास थे, शोहरत से बचते थे तो फिर उन के नेक आ'माल और उन की विलायत

مدینہ

1 ..... احیاءُ العلوم، کتاب ذم الجاہ والریاء، الشطر الاوّل فی حب الجاہ و الشہرۃ، بیان ذم الشہرۃ وانتشار الصیت، ۳/۳۴۰

2 ..... احیاءُ العلوم، کتاب ذم الجاہ والریاء، الشطر الثانی من الکتاب...الخ، بیان ذم الریاء، ۳/ ۳۶۴

www.dawateislami.net

की शोहरत कैसे हुई ?

इर्शाद : बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अ़मल करते, अपने आ'माल को लोगों से पोशीदा रखते और शोहरत से बचते थे, रही बात उन की शोहरत की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुख़्लिसीन के आ'माल को लोगों पर ख़ुद ज़ाहिर फ़रमा देता है और उन की महब्बत लोगों के दिलों में डाल दी जाती है और उन की मक़्बूलिय्यत को फैला दिया जाता है। ह़दीसे पाक में है : अगर तुम में से कोई शख़्स ऐसी सख़्त चट्टान में कोई अ़मल करे जिस का न तो कोई दरवाज़ा हो और न ही रोशन दान, तब भी उस का अ़मल ज़ाहिर हो जाएगा और जो होना है वोह हो कर रहेगा।[1]

इस ह़दीसे पाक के तह़्त मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अ़ह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : इस फ़रमाने आ़ली का मक़्सद येह है कि तुम रिया कर के अपने सवाब क्यूं बरबाद करते हो ? तुम इख़्लास से नेकियां करो ख़ुफ़्या करो **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी नेकियां ख़ुद ब ख़ुद लोगों को बता देगा, लोगों के दिल तुम्हें नेक मानने लगेंगे, येह निहायत ही मुजर्रब है। बा'ज़ लोग ख़ुफ़्या तहज्जुद पढ़ते हैं लोग ख़्वाह म ख़्वाह उन्हें तहज्जुद ख़्वां कहने लगते हैं, तहज्जुद बल्कि हर नेकी का नूर चेहरे पर नुमूदार हो जाता है जिस का दिन रात मुशा-हदा हो रहा है, लोग हुज़ूर ग़ौसे पाक, ख़्वाजा अजमेरी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) को वली कहते हैं क्यूं कि रब तआ़ला कहलवा रहा है येह है इस फ़रमाने आ़ली का ज़ुहूर।[2]

---

1 ..... مسندِ امام احمد، مسند ابی سعید خدری، ۴/۵۷، حدیث: ۱۱۲۳۰

2 ..... मिरआतुल मनाजीह़, 7/145

www.dawateislami.net

ओ़हदा या मन्सब त़लब करना कैसा ?

अ़र्ज़ : अपनी नेकनामी का इज़्हार कर के कोई ओ़हदा या मन्सब त़लब करना कैसा है ? नीज़ तन्ज़ीमी ज़िम्मादारी त़लब करना कैसा है ?

इर्शाद : कोई शख़्स किसी मन्सब का अह्ल हो और उस के इ़लावा कोई दूसरा अह्ल न हो तो उस का इस निय्यत से अपनी नेकनामी का इज़्हार कर के ओ़हदा व मन्सब त़लब करना कि वोह अह़कामे इलाहियह क़ाइम कर सके तो ऐसे शख़्स के लिये मन्सब त़लब करना न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि कई सूरतों में वाजिब है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने क़ह़ते शदीद में मख़्लूक़ को राह़त व आसाइश पहुंचाने की गरज़ से मन्सब त़लब फ़रमाया । ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुबारक क़ौल की ह़िकायत करते हुए पारह 13 **सूरए यूसुफ़** की आयत नम्बर 55 में इर्शाद होता है :

قَالَ اجْعَلْنِیْ عَلٰى خَزَآىٕنِ الْاَرْضِۚ-اِنِّیْ حَفِیْظٌ عَلِیْمٌ ﴿۵۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : यूसुफ़ ने कहा मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर कर दे बेशक मैं ह़िफ़ाज़त वाला इ़ल्म वाला हूं।

इस आयते करीमा के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नइ़मुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : अह़ादीस में त़-लबे इमारत (सरदारी/ह़ुकूमत) की मुमा-न-अ़त आई है, इस के येह मा'ना हैं कि जब मुल्क में अह्ल मौजूद हों और इक़ामते अह़कामे इलाही किसी एक शख़्स

www.dawateislami.net

के साथ ख़ास न हो उस वक़्त इमारत त़लब करना मक्रूह है लेकिन जब एक ही शख़्स अह्ल हो तो उस को अह़कामे इलाहिय्यह की इक़ामत के लिये इमारत त़लब करना जाइज़ बल्कि वाजिब है और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इसी ह़ाल में थे आप रसूल थे, उम्मत के मसालेह़ (भलाई वाले कामों) के आ़लिम थे, येह जानते थे कि क़ह़ते़ शदीद होने वाला है जिस में ख़ल्क़ को राह़तो आसाइश पहुंचाने की येही सबील (राह) है कि इ़नाने ह़ुकूमत (ह़ुकूमत की बाग डोर) को आप अपने हाथ में लें इस लिये आप ने इमारत त़लब फ़रमाई ।''

भाइयो ! हर दम बचो तुम हुब्बे जाहो माल से
हर घड़ी चोकस रहो शैत़ान की इस चाल से

(वसाइले बख़्शिश)

रही बात तन्ज़ीमी ज़िम्मादारी त़लब करने की तो इस का त़लब करना भी मुनासिब नहीं क्यूं कि नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने के लिये ज़िम्मादार के मन्सब पर फ़ाइज़ होना ज़रूरी नहीं, मा तह़त रह कर भी येह काम हो सकता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इख़्लास के साथ नेकी की दा'वत की धूमें मचाने वाला बना दे । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم۔

अ़मल ज़ाहिर होने पर ख़ुश होना

अ़र्ज़ : पोशीदा अ़मल के लोगों पर ज़ाहिर हो जाने के बा'द दिल में ख़ुशी मह़सूस करना कैसा है ?

इर्शाद : अगर किसी ने अपने अ़मल को पोशीदा रखने की भरपूर

www.dawateislami.net

कोशिश की इस के बा वुजूद किसी ने उस को अ़मल करते देख लिया जिस पर उसे दिल में ख़ुशी मह़सूस हुई तो इस में ह़रज नहीं बल्कि ऐसे शख़्स के लिये पोशीदा इ़बादत और अ़लानिया दोनों का सवाब है चुनान्चे ह़दीसे पाक में है ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं अपने मकान के अन्दर नमाज़ की जगह में था, एक शख़्स आ गया और येह बात मुझे पसन्द आई कि उस ने मुझे इस ह़ाल में देखा। इर्शाद फ़रमाया : ऐ अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) **अल्लाह** तआ़ला तुम पर रह़्म फ़रमाए, तुम्हारे लिये दो सवाब हैं, पोशीदा इ़बादत करने का और अ़लानिया का।[1]

इस ह़दीसे पाक के तह़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : ऐ अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! **अल्लाह** तआ़ला तुम पर रह़्म फ़रमाए, तुम्हारे लिये दो अज्र हैं : **एक** पोशीदा अ़मल का तुम्हारे इख़्लास की बदौलत और **दूसरा** अ़लानिया अ़मल का तुम्हारी इस अ़मल में पैरवी किये जाने की वज्ह से या तुम्हारी इ़बादत पर ख़ुशी और इस के तुम से ज़ाहिर होने की वज्ह से। येह भी कहा गया है कि इस से मुराद येह है कि अ़मल के ज़ाहिर हो जाने पर इस उम्मीद से ख़ुश होना कि जिस ने उसे येह अ़मल करते देखा है वोह भी इसी की मिस्ल अ़मल करेगा तो इस के लिये भी इस अ़मल करने वाले के बराबर अज्र होगा, येही मा'ना आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के

مدینہ

1 ...... مشکاۃ المصابیح، کتاب الرقاق، باب الریاء والسمعۃ، ۲/۲۶۸، حدیث: ۵۳۲۲

www.dawateislami.net

इस फ़रमाने आ़लीशान का है : जो कोई अच्छा त़रीक़ा ईजाद करे तो उस के लिये उस का अज्र है और इस पर अ़मल करने वालों का भी अज्र है।[1] और ज़ाहिर है कि इस का ख़ुश होना त़ब्ई त़ौर पर है जो कि शरीअ़त के मुत़ाबिक़ भी है या'नी उसे येह बात पसन्द है कि कोई उसे अच्छी ह़ालत में देखे और येह बात ना पसन्द है कि कोई उसे बुरी ह़ालत में देखे, क़त़ए़ नज़र इस के कि उस का येह अ़मल रियाकारी और उ़ज्ब पसन्दी के लिये हो तो उस की येह ह़ालत सरकार आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान के मुवाफ़िक़ है कि जिसे उस की नेकी ख़ुश करे और बुराई रन्जीदा करे तो वोह मोमिन है।[2] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया :

﴿قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ۝۵۸﴾ (پ۱۱، یونس:۵۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ **अल्लाह** ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और इसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें वोह उन के सब धन दौलत से बेहतर है। पस मोमिन आ'माल की तौफ़ीक़ मिलने पर इस त़रह़ ख़ुश होता है जैसे ग़ैरे मोमिन कस्रते माल पर ख़ुश होता है।[3]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बद क़िस्मती से आज हमारा अपनी नेकियां छुपाने का ज़ेह्न ही नहीं। ख़ुद नुमाई और हुब्बे जाह की आफ़त इस क़दर आ़म हो चुकी है कि जब तक किसी

مدینہ

1 .....النهاية، باب الباء مع الدال، ۱/۱۰۶

2 .....مُعجم اوسط، من اسمه احمد، ۱/۴۵۱، حدیث: ۱۶۵۹

3 .....مرقاة المفاتيح، كتاب الرقاق، باب الرياء والسمعة، الفصل الثاني، ۹/۱۸۲، تحت الحديث: ۵۳۲۲

www.dawateislami.net

को अपनी नेकियां बता कर ख़ूब दादो तह्सीन वुसूल न कर लें तशफ़्फ़ी (तसल्ली) ही नहीं होती और अगर ख़ुश क़िस्मती से कोई अ़मल पोशीदा तौ़र पर कर भी लें और वोह किसी पर ज़ाहिर हो जाए तो अपने कारनामे पर ख़ुशी और फ़ख़्र से फूले नहीं समाते जब कि बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن ऐसे भी गुज़रे हैं जो बारगाहे इलाही में अपनी और अपने आ'माल के पोशीदा रहने की दुआ़एं किया करते थे और रियाकारी की तबाह कारियों से बचने के ख़ौफ़ का येह आ़लम था कि अगर उन की इ़बादत लोगों पर ज़ाहिर हो जाती तो वोह दुन्या में रहना ही गवारा न करते चुनान्चे

शोहरत के बा'द मैं ज़िन्दा रहना नहीं चाहता

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی रौज़ुर्रियाह़ीन'' में नक़्ल करते हैं : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه येह दुआ़ मांगा करते थे कि ''**या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपने फ़ज़्लो करम से ख़ूब नवाज़ मगर मुझे लोगों में ग़ैर मा'रूफ़ रख कि लोग मुझे न पहचानें**'' एक रात वोह नमाज़ में गिर्या व ज़ारी फ़रमा रहे थे तो कुछ लोगों ने देखा कि उन के सर पर एक नूरानी क़िन्दील रोशन है जिस की रोशनी आंखों को ख़ीरा (ह़ैरान) कर रही है। सुब्ह़ उन की बारगाह में रात वाली करामत का ज़िक्र किया गया तो वोह बेचैन हो गए कि लोगों पर उन की इ़बादत क्यूं ज़ाहिर हुई ? बे साख़्ता अपने हाथ बारगाहे इलाही में उठा दिये और

www.dawateislami.net

अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे राज़दार परवर दगार ! मेरा राज़ तो फ़ाश हो चुका, अब मैं इस शोहरत के बा'द ज़िन्दा नहीं रहना चाहता।" येह कहते हुए अपना सर सज्दे में रख दिया। लोगों ने हिला जुला कर देखा तो उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी (बदन) से परवाज़ कर चुकी थी।[1]

राज़ फ़ाश होने पर मौत की आरज़ू

मुका-श-फ़तुल क़ुलूब में नक़्ल है कि एक शख़्स ने एक ग़ुलाम ख़रीदा। वोह ग़ुलाम दिन को अपने आक़ा की ख़िदमत करता और रात को **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत करता। कुछ मुद्दत के बा'द एक रात उस का आक़ा घर में चलते चलते ग़ुलाम के कमरे में पहुंच गया, क्या देखता है कि कमरा रोशन है, ग़ुलाम **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में सज्दा रेज़ है, उस के सर पर आस्मान व ज़मीन के दरमियान एक रोशन क़िन्दील आवेज़ां (लटकी हुई) है और वोह बारगाहे इलाही में आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ मुनाजात कर रहा है कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तूने मुझ पर मेरे आक़ा का ह़क़ और दिन को उस की ख़िदमत लाज़िम कर दी है, अगर येह मस्रूफ़िय्यत न होती तो मैं दिन रात सिर्फ़ तेरी इ़बादत में मस्रूफ़ रहता इस लिये ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरा उ़ज़्र क़बूल फ़रमा ले। आक़ा उसे देखता रहा यहां तक कि सुब्ह़ हो गई, रोशन क़िन्दील वापस चली गई और मकान की छत मिल गई। येह सारा मन्ज़र देख कर आक़ा वापस आ गया और सब माजरा अपनी ज़ौजा को सुनाया। दूसरी रात वोह अपनी ज़ौजा

1 ..... روض الرياحين، الحكاية الخمسون بعد الثلاث مئة، ص ٢٨٨

www.dawateislami.net

को भी साथ ले कर गुलाम के दरवाज़े पर आया तो देखा कि गुलाम सज्दे में पड़ा है और क़िन्दील उस के सर पर है वोह दोनों खड़े हो कर येह सब मन्ज़र देखते और रोते रहे। आख़िरे कार सुब्ह़ हुई तो उन्हों ने गुलाम को बुला कर कहा : तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आज़ाद हो ताकि तुम जो उ़ज़्र पेश कर रहे थे वोह दूर हो जाए और तुम यक्सूई के साथ **अल्लाह** तआ़ला की इबादत कर सको। गुलाम ने येह सुन कर कहा : ऐ साहि़बे राज़ ! राज़ तो खुल गया, इस के बा'द मैं ज़िन्दगी नहीं चाहता। पस उसी वक़्त वोह गुलाम गिरा और उस की रूह़ क़ालिबे ख़ाकी (बदन) से आज़ाद हो गई।[1]

नेकियों के इज़्हार की जाइज़ सूरतें

अ़र्ज़ : नेकियों को मुत़्लक़न छुपाने का हुक्म है या इन के इज़्हार की भी कोई सूरत है ?

इर्शाद : नेकियों को ह़त्तल इम्कान पोशीदा रखने ही में आ़फ़िय्यत है मगर बा'ज़ सूरतों में अच्छी निय्यतों के साथ इन के इज़्हार की भी इजाज़त है, म-सलन ऐसा शख़्स जो लोगों का पेश्वा हो, लोग उस से अ़क़ीदत व मह़ब्बत रखते हों और नेक आ'माल में उस की पैरवी करते हों तो ऐसे शख़्स का लोगों की तरग़ीब की निय्यत से अपने अ़मल को ज़ाहिर करना न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि अफ़्ज़ल है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : पोशीद इबादत अ़लानिया इबादत से अफ़्ज़ल है और जिस की लोग पैरवी करते हों उस की अ़लानिया इबादत पोशीदा

1 ...... مکاشفۃ القلوب، الباب الحادی عشر...الخ، ص۳۹ ملخصاً

www.dawateislami.net

इ़बादत से अफ़्ज़ल है ।[1]

तह़दीसे ने'मत के त़ौर पर इ़ल्मो अ़मल का इज़्हार

इसी त़रह़ तह़दीसे ने'मत (ने'मत का चरचा करने) के त़ौर पर भी अपने इ़ल्मो अ़मल को ज़ाहिर करने की इजाज़त है जैसा कि **फ़तावा आ़लमगीरी** में हैं : आ़लिम के लिये कोई ह़रज नहीं कि वोह तह़दीसे ने'मते इलाही के त़ौर पर अपना आ़लिम होना ज़ाहिर करे ताकि लोग उस से इस्तिफ़ादा करें ।[2]

दूसरों को सिखाने की निय्यत से नेक अ़मल का इज़्हार

ऐसे ही दूसरों की ता'लीम के लिये भी अपने नेक अ़मल का इज़्हार करना जाइज़ है जैसा कि मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : अपनी इ़बादात लोगों को दिखाना ता'लीम के लिये येह रिया नहीं बल्कि अ़-मली तब्लीग़ व ता'लीम है, इस पर सवाब है । मशाइख़ फ़रमाते हैं : सिद्दीक़ीन की रिया मुरीदीन के इख़्लास से बेहतर है, इस का येही मत़लब है ।[3]

लोगों को बद गुमानी से बचाने के लिये अ़मल का इज़्हार

अपनी ज़ात से तोहमत दूर करने और लोगों को बद गुमानी से

---

1 ......شعب الایمان، باب فی السرور بالحسنة والاغتمام بالسیئة، ۵/۳۷۶، حدیث: ۷۰۱۲

2 ......فتاویٰ ہندیة، کتاب الشہادات، الباب الثلاثون فی المتفرقات، ۵/۳۷۷

3 ..... मिरआतुल मनाजीह़, 7/127

www.dawateislami.net

बचाने के लिये भी अपने अ़मल को ज़ाहिर करने की इजाज़त है जैसा कि तफ़्सीरे रूहुल बयान में है कि अगर नेक अ़मल फ़राइज़ में से हो तो फ़राइज़ के ह़क़ में से येह है कि उस का ए'लान और तश्हीर की जाए । रसूले करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ को छुपाना नहीं चाहिये ।[1] क्यूं कि येह फ़राइज़ ए'लामे इस्लाम (इस्लाम का इज़्हार) और शआ़इरे दीन (दीन की निशानियों) में से हैं, इस लिये इन का तर्क करने वाला मज़म्मत व मलामत का मुस्तह़िक़ होता है लिहाज़ा इन के इज़्हार के ज़रीए़ तोहमत का इज़ाला ज़रूरी है । अगर नफ़्ली त़ाअ़त है तो इस का ह़क़ येह है कि इसे मख़्फ़ी रखा जाए क्यूं कि इस के तर्क पर तोहमत और मलामत नहीं होती । अगर इस के इज़्हार से भी मक़्सूद येह हो कि लोग इस की इक़्तिदा करें तो उस का ज़ाहिर करना भी अच्छा है ।[2]

बुज़ुर्गों के सामने नेकियों का इज़्हार

अ़र्ज़ : किन लोगों के सामने अपनी नेकियों के इज़्हार की इजाज़त है और किन के सामने नहीं ?

इर्शाद : आ़म ह़ालात में अ़वामुन्नास के सामने अपने पोशीदा नेक आ'माल के इज़्हार की ह़ाजत नहीं कि इस से रियाकारी, ख़ुद पसन्दी और हुब्बे जाह वग़ैरा आफ़ात में मुब्तला होने का अन्देशा

مدینہ

1 ......النھایہ، باب الغین مع المیم، ۳/۳۴۸

2 ......روح البیان، پ۳۰، الماعون، تحت الآیۃ:۶، ۱۰/۵۲۳

www.dawateislami.net

है। रही ख़वास की बात तो इन के सामने अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ अपनी नेकियों का इज़्हार किया जा सकता है, म-सलन ग़ैरे आ़लिम का आ़लिमे दीन, मुरीद का अपने पीर और शागिर्द का अपने उस्ताद के सामने इस निय्यत से अपने पोशीदा आ'माल बयान करना कि अगर इन में कोई ग़-लती या कोताही हो तो येह इस्लाह़ फ़रमा देंगे, नीज़ मेरे इन आ'माल पर ख़ुश हो कर बारगाहे इलाही में इस्तिक़ामत और इन की मक़्बूलिय्यत की दुआ़ फ़रमा देंगे या मेरा इन के सामने किसी नेक अ़मल म-सलन म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र वग़ैरा का ज़िक्र करना दूसरों की तरग़ीब का सामान होगा तो येह जाइज़ है चुनान्चे मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : उम्मती का नबी से, मुरीद का शैख़ से, शागिर्द का उस्ताद से अपनी ख़ुफ़्या नेकियां बयान करना रिया नहीं बल्कि उन की दुआ़ ले कर ज़ियादा क़ाबिले क़बूल बनाना है।[1]

तरग़ीब या तह़दीसे ने'मत के लिये नेकियों का इज़्हार

अ़र्ज़ : क्या हर एक को तह़दीसे ने'मत और दूसरों को तरग़ीब देने के लिये नेकियों को ज़ाहिर करने की इजाज़त है ?

इर्शाद : तह़दीसे ने'मत (या'नी ने'मत का चरचा करने) और दूसरों को

1..... मिरआतुल मनाजीह़, 3/95

www.dawateislami.net

रग़बत दिलाने की निय्यत से नेक अ़मल का इज़्हार तो किया जा सकता है मगर तह्दीसे ने'मत या दूसरों की रग़बत के लिये अपना पोशीदा अ़मल ज़ाहिर करने से पहले ख़ूब अच्छी त़रह़ ग़ौर कर लेना चाहिये कि कहीं येह शैत़ान की चाल तो नहीं क्यूं कि शैत़ान बड़ा होशियार और मक्कार है, हो सकता है कि वोह तह्दीसे ने'मत और दूसरों की रग़बत का वस्वसा दिला कर रियाकारी की तबाहकारी में मुब्तला कर दे लिहाज़ा हर एक को तह्दीसे ने'मत के त़ौर पर अपने आ'माल के इज़्हार की इजाज़त नहीं, सिर्फ़ वोही लोग तह्दीसे ने'मत के त़ौर पर अपने आ'माल ज़ाहिर कर सकते हैं जो इस के अह्ल हों, इस मस्अले की बारीकियों को जानते हों और जिन के अक़्वाल व अफ़्आ़ल की पैरवी की जाती हो ताकि मख़्लूक़ को इन के अ़मल से रग़बत मिले। अगर आ़म लोग तह्दीसे ने'मत या तरग़ीब की निय्यत से अपने अ़मल को ज़ाहिर करने जाएंगे तो मख़्लूक़ का फ़ाएदा होना तो दर किनार कहीं ख़ुद-नुमाई और तकब्बुर वग़ैरा का शिकार हो कर अपनी नेकियों पर ही पानी न फैर दें।

नफ़्से बदकार ने दिल पर येह क़ियामत तोड़ी
अ़-मले नेक किया भी तो छुपाने न दिया

(सामाने बख़्शिश)

नेकियों और ख़ूबियों के इज़्हार की चन्द मिसालें

अ़र्ज़ : आ़म त़ौर पर अपनी नेकियों और ख़ूबियों का इज़्हार किस त़रह़ किया जाता है ?

www.dawateislami.net

इर्शाद : आजकल हमारे मुआ़-शरे में ख़ुद सिताई, तकब्बुर और रियाकारी वग़ैरा के बात़िनी अमराज़ आ़म होते चले जा रहे हैं। अक्सर लोगों को अपनी ता'रीफ़ और ख़ूबियां बयान करने का शौक़ होता है, जब तक अपने नाम के साथ कोई शनाख़्त ज़ाहिर न करें तो उस वक़्त तक उन्हें चैन नहीं आता। लोग बिला वज्ह अपने फ़ज़ाइल बयान करते नहीं थकते, म-सलन अगर कोई ह़ज की सआ़दत से मुशर्रफ़ हो चुका है तो ह़ज करते ही बड़े फ़ख़्र से अपने नाम के साथ ह़ाजी का टाइटल लगा देता है। बबांगे दुहुल अपने ह़ज व उ़म्रह की ता'दाद बयान की जाती है कि "मैं हर साल ह़ज की सआ़दत पाता हूं, अब तक इतने ह़ज व उ़म्रह की सआ़दत मिल चुकी है वग़ैरा" सफ़रे ह़ज और सफ़रे मदीना के वाक़िआ़त बयान किये जाते हैं। इन सब बातों में दर पर्दा अपनी फ़ज़ीलत और ता'रीफ़ हो रही होती है कि येह जनाब इस इस सआ़दत से मुशर्रफ़ हो चुके हैं। रही बात बुज़ुर्गों के ह़ज की ता'दाद की वोह या तो उन के ख़ुद्दाम की बयान कर्दा होगी या तह़दीसे ने'मत के लिये ब ज़बाने ख़ुद इर्शाद फ़रमाया होगा क्यूं कि सरापा इख़्लास बन्दों का मक़्सद हरगिज़ नेकनामी या बुज़ुर्गी का सिक्का जमाना नहीं होता। बहरह़ाल अगर कोई अपने ह़ज व उ़म्रह की ता'दाद बयान करे या अपने किसी नेक अ़मल का इज़्हार करे तो हमें उसे रियाकार कहने से बचते हुए हुस्ने ज़न से काम लेना चाहिये कि दिलों का ह़ाल रब्बे जुल जलाल ख़ूब जानता है।

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ अगर कोई त़ालिबे इल्म हि़फ़्ज़े कुरआन या आ़लिम कोर्स की सआ़दत ह़ासिल कर लेता है तो अपने नाम के साथ ह़ाफ़िज़ व क़ारी और अ़ल्लामा लिखना और बोलना शुरूअ़ कर देता है और ह़द तो येह है कि बा'ज़ द-र-जए हि़फ़्ज़ या क़िराअत या आ़लिम कोर्स में दख़िला लेते ही अपने आप को ह़ाफ़िज़ क़ारी, और अ़ल्लामा कहना और लिखना शुरूअ़ कर देते हैं। अगर कोई नाम पूछेगा तो झट मुंह से ''ह़ाफ़िज़ फ़ुलां'', ''क़ारी फ़ुलां'' निकल जाता है।

यूं ही दुन्यवी ओ़हदे और मन्सब वाले अफ़्राद म-सलन प्रोफ़ेसर, डॉक्टर, केप्टन, MPA और MNA वग़ैरा भी अपने ओ़हदे और मन्सब को अपने नाम का ह़िस्सा बना लेते हैं। अगर इस ओ़हदे या ज़िम्मादारी से सुबुकदोश भी हो जाएं मगर येह अल्क़ाबात, ख़ित़ाबात, ओ़हदे नामों के साथ चिपके रहते हैं बल्कि मरने के बा'द क़ब्र की तख़्ती पर भी नुमायां ह़र्फ़ से लिख दिये जाते हैं। शायद इन्हीं चीज़ों को इ़ज़्ज़तो वक़ार का मे'यार समझा जाता है ह़ालां कि येह चीज़ें ख़ुद-नुमाई और तकब्बुर की त़रफ़ ले जाती हैं। काश ! हर मुसल्मान की नुमूदो नुमाइश की ख़्वाहिश से जान छूट जाए, इख़्लास की दौलत नसीब हो और अपने आ'माल व अफ़्आ़ल पर दादो तह़्सीन के त़ालिब होने के बजाए ऐसे बे निशान हो जाएं कि बे निशानी व गुमनामी ही उन का नाम हो जाए।

बे निशानों का निशां मिटता नहीं मिटते मिटते नाम हो ही जाएगा

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन्सान को चाहिये कि उस के अन्दर जो भी ख़ूबी हो या उसे कोई भी नेक अ़मल बजा लाने की सआ़दत मिले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे कि उस ने येह ख़ूबी और नेक अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई है । फिर अ़मल कर लेने के बा'द ख़ौफ़ की कैफ़िय्यत त़ारी हो कि न जाने उस का येह अ़मल बारगाहे इलाही में मक़्बूल भी है या नहीं ? जब अ़मल की क़बूलिय्यत का इ़ल्म ही नहीं तो उस अ़मल के बारे में लोगों को बताने और दिखाने का क्या फ़ाएदा ? हां ! अगर वोह नेक अ़मल बारगाहे इलाही में मक़्बूल है तो उस की जज़ा देने वाला परवर दगार عَزَّوَجَلَّ उसे जानता है लिहाज़ा अपने मुंह से अपनी ख़ूबियों और नेकियों का इज़्हार कर के अपनी जानों को सुथरा न बताया जाए कि क़ुरआने करीम में इस की मुमा-न-अ़त बयान फ़रमाई गई है चुनान्चे पारह 27 **सू-रतुन्नज्म** की आयत नम्बर 32 में इर्शाद होता है :

هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَ اِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِیْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْۚ فَلَا تُزَكُّوْۤا اَنْفُسَكُمْؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى۠(۳۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह तुम्हें ख़ूब जानता है तुम्हें मिट्टी से पैदा किया और जब तुम अपनी माओं के पेट में ह़म्ल थे तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ वोह ख़ूब जानता है जो परहेज़ गार हैं ।

इस आयते मुबा-रका का शाने नुज़ूल बयान करते हुए ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अ़ल्लामा **अ़ब्दुल्लाह** बिन अह़मद मह़मूद नसफ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : येह आयत उन लोगों के ह़क़ में नाज़िल हुई जो नेक आ'माल करते थे और कहते थे : हमारी नमाज़ें, हमारे रोज़े, हमारे ह़ज । येह (नेकियों के इज़्हार की मुमा-न-अ़त) उस वक़्त है जब कि बत़ौरे फ़ख़्र व रिया हो । अगर ने'मते इलाही के ए'तिराफ़ के लिये हो तो येह जाइज़ है क्यूं कि त़ाअ़त पर मसर्रत इबादत और उस का ज़िक्र करना शुक्र है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ूब जानता है जो परहेज़ गार है लिहाज़ा लोगों के जानने और ता'रीफ़ करने के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का जानना और जज़ा देना ही काफ़ी जानो ।[1]

मुझ को ख़ज़ाना दे तक़्वा का
या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश)

अपनी ता'रीफ़ सुन कर क्या करना चाहिये ?

अ़र्ज़ : अगर कोई शख़्स हमारी या हमारे किसी अ़मल की ता'रीफ़ करे तो उस वक़्त हमें क्या करना चाहिये ?

इर्शाद : लोगों के मुंह से अपनी ता'रीफ़ और फ़ज़ाइल सुन कर अपने नफ़्स को क़ाबू में रखना इन्तिहाई मुश्किल होता है इस लिये अपनी ता'रीफ़ सुनने से बचने की कोशिश करनी चाहिये । अगर कोई शख़्स किसी के मुंह पर उस की या उस के किसी अ़मल की ता'रीफ़ करे तो उसे चाहिये कि ख़ुशी से फूलने के

1 ..... تفسیر نسفی، پ ۲۷، النجم، تحت الآیۃ: ۳۲، ص ۱۱۸۱-۱۱۸۲

www.dawateislami.net

बजाए इस्तिग़्फ़ार करे और ख़ुद को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डराने की कोशिश करे कि आज लोग मेरी और मेरे जिन आ'माल की ता'रीफ़ कर रहे हैं, न जाने वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मक़्बूल भी हैं या नहीं ? जिन आ'माल की वज्ह से आज मेरी बुज़ुर्गी व परहेज़ गारी के डंके बज रहे हैं, कल बरोज़े क़ियामत येह आ'माल कहीं मेरी रुस्वाई का सबब न बन जाएं।

आज बनता हूं मुअ़ज़्ज़ज़ जो खुले ह़श्र में ऐ़ब
आह ! रुस्वाई की आफ़त में फंसूंगा या रब !

(वसाइले बख़्शिश)

झूटी ता'रीफ़ सुनने वालों के लिये वईदे शदीद

अगर ता'रीफ़ करने वाला ऐसे वस्फ़ के साथ आप की ता'रीफ़ करे जो आप में मौजूद नहीं तो फ़ौरन उसे मन्अ़ कर दीजिये कि मैं ऐसा नहीं हूं। अगर आप अपनी झूटी ता'रीफ़ सुन कर ख़ामोश रहे, मुस्कुराते रहे या सच्ची ता'रीफ़ पर भी अन्दर ही अन्दर से लुत्फ़ अन्दोज़ होते, फूलते और अपना कमाल तसव्वुर करते रहे तो ख़ुद-सिताई की आ़दत से दुन्या व आख़िरत दाव पर लग सकती है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हुब्बे सना (अपनी ता'रीफ़ की ख़्वाहिश) ग़ालिबन (या'नी अक्सर सूरतों में) ख़स्लते मज़्मूम (क़ाबिले मज़म्मत आ़दत) है और कम अज़ कम कोई ख़स्लते मह़मूदा (क़ाबिले ता'रीफ़

www.dawateislami.net

आ़दत) नहीं और इस के अ़वाक़िब (नताइज) ख़त़रनाक हैं। ह़दीस में है **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : حُبُّ الثَّنَاءِ مِنَ النَّاسِ يُعْمِيْ وَيُصِمُّ (या'नी) सिताइश पसन्दी आदमी को अन्धा और बहरा कर देती है।[1] और अगर अपनी झूटी ता'रीफ़ को दोस्त रखे कि लोग इन फ़ज़ाइल से उस की सना करें जो इस में नहीं जब तो सरीह़ ह़रामे क़त़ई है। قَالَ اللهُ تَعَالٰى (**अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया :)

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ یَفْرَحُوْنَ بِمَاۤ اَتَوْا وَّ یُحِبُّوْنَ اَنْ یُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ یَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۱۸۸﴾

(پ ۴، اٰلِ عمرٰن : ۱۸۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हरगिज़ न समझना उन्हें जो ख़ुश होते हैं अपने किये पर और चाहते हैं कि बे किये उन की ता'रीफ़ हो ऐसों को हरगिज़ अ़ज़ाब से दूर न जानना और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

हां ! अगर ता'रीफ़ वाक़ेई हो तो अगर्चे तावीले मा'रूफ़ो मशहूर के साथ जैसे شَمْسُ الْاَئِمَّه وفَخْرُ الْعُلَمَاء وتَاجُ الْعَارِفِيْن وَاَمْثَالُ ذٰلِكَ (इमामों के आफ़्ताब, अहले इ़ल्म के लिये फ़ख़्र और आ़रिफ़ों के ताज और इसी क़िस्म और नौअ़ के दूसरे तौसीफ़ी कलिमात) कि मक़्सूद अपने अ़स्र या मिस्र के लोग होते हैं और इस पर इस लिये ख़ुश न हो कि मेरी ता'रीफ़ हो रही है बल्कि इस लिये कि उन लोगों की (ता'रीफ़) इन (अ़वामुन्नास) को नफ़्ए दीनी पहुंचाएगी, सम्ए

---

1 ...... فِردوسُ الاخبار، باب الحاء، ۱/ ۳۴۷، حدیث: ۲۵۴۸

www.dawateislami.net

क़बूल से सुनेंगे जो उन को नसीह़त की जाएगी तो येह ह़क़ीक़तन हुब्बे मद्ह़ (या'नी अपनी ता'रीफ़ को पसन्द करना) नहीं बल्कि हुब्बे नुस्ह़े मुस्लिमीन (मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही से मह़ब्बत) है और वोह मह़्ज़ (ख़ालिस) ईमान है ।[1]

मुख़्लिस होने की अ़लामत

अपनी ता'रीफ़ और मज़म्मत सुनने के मुआ़-मले में इन्सान को शीर ख़्वार बच्चे की त़रह़ बे परवाह हो जाना चाहिये कि येह मुख़्लिस होने की अ़लामत है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से सुवाल हुवा कि इन्सान कब मुख़्लिस होता है ? तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इर्शाद फ़रमाया : जब शीर ख़्वार बच्चे की त़रह़ उस की आ़दत हो कि उस की कोई ता'रीफ़ करे तो उसे अच्छी नहीं लगती और मज़म्मत करे तो उसे बुरी मा'लूम नहीं होती ।[2] या'नी जिस त़रह़ शीर ख़्वार बच्चा अपनी ता'रीफ़ व मज़म्मत से बे परवाह होता है इसी त़रह़ जब इन्सान अपनी ता'रीफ़ व मज़म्मत की परवाह न करे तो उसे मुख़्लिस कहा जा सकता है ।

दूसरों की नेकियां देख कर क्या करना चाहिये ?

अ़र्ज़ : जिस के सामने किसी की नेकी ज़ाहिर हो उसे क्या करना चाहिये ?

इर्शाद : अगर किसी को नेकी करता देखें या किसी की नेकनामी ज़ाहिर हो तो उस के लिये बारगाहे इलाही में दुआ़ करनी चाहिये

---

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, 21/596-597

2 ..... تنبیہ المغترین، ص ۲۴ ملخصاً

www.dawateislami.net

कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इसे इस नेक अ़मल पर इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा और मुझे भी इस अ़-मले ख़ैर की सआ़दत नसीब फ़रमा । बहरहा़ल किसी मुसल्मान का नेक अ़मल ज़ाहिर हो या न हो बहर सूरत उस के बारे में हुस्ने ज़न से काम लीजिये और बद गुमानी को क़रीब भी न आने दीजिये म-सलन यूं न कहिये कि ''येह तो इन्तिहाई गुनाहगार है, नेकी के क़रीब से भी नहीं गुज़रा, येह मह़ज़ दिखावे के लिये अ़मल कर रहा है वग़ैरा'' कि बसा अवक़ात बद गुमानी की हाथों हाथ दुन्या में भी सज़ा मिल जाती है, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मक्हूल दिमश्क़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जब किसी को रोता देखो तो तुम भी उस के साथ रोने लग जाओ, बद गुमानी मत करो कि येह रियाकारी कर रहा है । एक मर्तबा मैं ने एक रोने वाले मुसल्मान के बारे में बद गुमानी कर ली थी तो उस की सज़ा में साल भर रोने से मह़रूम रहा ।[1]

आ'माले बद को भी छुपाइये

अ़र्ज़ : क्या नेकियों की त़रह़ गुनाहों को भी छुपाने का हुक्म है ?

इर्शाद : जी हां ! नेकियों को छुपाने की तो उ़मूमी तरग़ीब है लेकिन गुनाहों को छुपाने का बत़ौरे ख़ास हुक्म है । नेकियों को तो इस लिये छुपाया जाता है ताकि वोह तकब्बुर व रियाकारी वग़ैरा के सबब ज़ाएअ़ न हो जाएं जब कि गुनाहों को इस लिये छुपाया जाता है कि वोह पहले ही से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का

1 ...... تَنبِیهُ الْمُغتَرِّین، ص۱۲۲

www.dawateislami.net

मूजिब (सबब) होते हैं और उन्हें ज़ाहिर करना जुर्अत और दीदा दिलेरी है लिहाज़ा इन का इज़्हार हरगिज़ न किया जाए। **फ़तावा शामी** में है اِظْهَارُ الْمَعْصِيَةِ مَعْصِيَةٌ या'नी गुनाहों का इज़्हार भी गुनाह है।[1]

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है : मेरे हर उम्मती को मुआफ़ कर दिया जाएगा सिवाए उन लोगों के जो गुनाहों को ज़ाहिर करते हैं और गुनाह ज़ाहिर करने की येह सूरत है कि कोई मर्द रात को कोई (गुनाह) काम करे, फिर जब सुब्ह़ हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस का पर्दा रख लिया हो, फिर वोह कहे (किसी को बताए) कि ऐ फुलां ! मैं ने गुज़श्ता रात इस इस त़रह़ किया है ह़ालां कि उस ने इस ह़ाल में रात गुज़ारी थी कि उस के रब عَزَّوَجَلَّ ने उस का पर्दा रखा हुवा था और सुब्ह़ को वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रखे हुए पर्दे को खोल दे।[2] इस ह़दीसे पाक के तह़्त शारेह़े बुख़ारी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : गुनाह का इरतिकाब बहरह़ाल गुनाह है, मगर उस का ए'लान करना भी गुनाह है बल्कि इरतिकाबे गुनाह से बड़ा गुनाह है येह गुनाह की इशाअ़त भी है और निडर होना भी है।[3]

अगर किसी शख़्स की नमाज़ क़ज़ा हो जाए तो वोह लोगों के सामने इस का इज़्हार न करे क्यूं कि नमाज़ क़ज़ा कर देना एक

❶..... ردُّ المُحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب اذا أسلم المرتد، ۲/۶۵۰

❷..... بخاری، کتاب الادب، باب ستر المؤمن علی نفسہ، ۴/۱۱۸، حدیث: ۶۰۶۹

❸..... नुज़्हतुल क़ारी, 5/578

www.dawateislami.net

गुनाह है और लोगों के सामने इस का इज़्हार करना दूसरा गुनाह है इसी लिये हुक्म है कि वोह क़ज़ा नमाज़ घर में छुप कर अदा करे । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : अगर किसी अम्रे आ़म की वज्ह से जमाअ़त भर की नमाज़ क़ज़ा हो गई तो जमाअ़त से पढ़ें, येही अफ़्ज़ल व मस्नून है और मस्जिद में भी पढ़ सकते हैं और जह्री नमाज़ों में इमाम पर जह्र वाजिब है अगर्चे क़ज़ा हो और अगर ब वज्हे ख़ास बा'ज़ अश्ख़ास की नमाज़ जाती रही तो घर में तन्हा पढ़ें कि मा'सियत का इज़्हार भी मा'सियत है, क़ज़ा ह़त्तल इम्कान जल्द हो, ता'यीने वक़्त कुछ नहीं, एक वक़्त में सब वक़्तों की पढ़ सकता है ।[1] अलबत्ता बा'ज़ सूरतों में गुनाहों के इज़्हार की भी इजाज़त है म-सलन कोई शख़्स बे नमाज़ी और त़रह़ त़रह़ के गुनाहों का आ़दी था अब उसे तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हुई उस ने अपने तमाम गुनाहों से तौबा कर ली और शरीअ़त व सुन्नत का पाबन्द बन गया तो ऐसे शख़्स का लोगों के सामने अपने उन साबिक़ा गुनाहों का इस निय्यत से तज़्किरा करना कि उन्हें भी नेक बनने और गुनाहों से बचने की तरग़ीब मिले तो येह जाइज़ है जैसा कि तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने वाले इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की म-दनी बहारें वक़्तन फ़ वक़्तन सुनने को मिलती हैं जिन्हें सुन कर लोगों को नेकियां करने और गुनाहों से बचने का जज़्बा मिलता है, अलबत्ता यहां भी गुनाह

[1]..... फ़तावा र-ज़विय्या, 8/162

www.dawateislami.net

बयान करने में बहुत बारीकियां हैं जिन का ख़याल रखना ज़रूरी है।[1]

ख़ुफ़्या गुनाह की तौबा भी ख़ुफ़्या

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर ब तक़ाज़ाए ब-शरिय्यत किसी इन्सान से कोई गुनाह सरज़द हो जाए तो उसे चाहिये कि वोह अपने गुनाह को पोशीदा रखे और लोगों पर इस का इज़्हार न करे। अगर गुनाह छुप कर किया है तो उस की तौबा भी छुप कर करे ताकि लोग इस पर मुत्तलअ़ न हों और अगर गुनाह अ़लानिया किया है तो उस की तौबा भी अ़लानिया करे ताकि जिन लोगों के सामने येह गुनाह हुवा है उन के सामने ही उस का इज़ाला हो जाए और उन के ज़ेहन भी गुनाह करने वाले के हवाले से साफ़ हो जाएं। हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की कि **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे वसिय्यत कीजिये तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जहां तक मुम्किन हो अपने ऊपर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ लाज़िम कर लो, हर पथ्थर और दरख़्त के पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते रहो और जब कोई बुरा काम कर बैठो तो हर बुरे काम के लिये नई तौबा करो, अगर गुनाह ख़ुफ़्या किया हो तो तौबा भी ख़ुफ़्या करो और अगर गुनाह अ़लानिया है तो तौबा भी अ़लानिया

1..... म-दनी बहार लिखवाने या सुनाने से दूसरों की इस्लाह़ मक़्सूद होती है तो इस निय्यत से अपने उन साबिक़ा गुनाहों का इज़्हार कर सकते हैं जिन से तौबा की है, मगर ऐसे गुनाहों (म-सलन बदकारी वग़ैरा) का तज़्किरा न किया जाए जिन से लोग घिन खाते हों। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

करो ।[1] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें गुनाहों से बचने और ब तक़ाज़ाए ब-शरिय्यत सरज़द हो जाने की सूरत में उन्हें छुपाने और फ़िलफ़ौर तौबा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए,

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बना दे मुझे नेक नेकों का स-दक़ा
गुनाहों से हर दम बचा या इलाही

(बसाइले बख़्शिश)

किसी के गुनाह पर मुत्तलअ़ हों तो क्या करें ?

अ़र्ज़ : किसी की बदी पर मुत्तलअ़ हो जाएं तो क्या करना चाहिये ?

इर्शाद : अगर किसी को गुनाह में मुब्तला देखें या उस की बुराई पर मुत्तलअ़ हो जाएं तो ''اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر'' या'नी नेकी का हुक्म करने और बुराई से मन्अ़ करने'' के अहम फ़रीज़े को अदा करते हुए अपनी इस्तिता़अ़त के मुता़बिक़ उसे रोकने की कोशिश कीजिये। अगर हाथ या ज़बान से रोकने की इस्तिता़अ़त न हो तो कम अज़ कम दिल में उस फ़े'ल को ज़रूर बुरा जानिये कि हादिये राहे नजात, सरवरे काएनात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम में से कोई किसी बुराई को देखे तो उसे चाहिये कि उस बुराई को अपने हाथ से बदल दे और जो अपने हाथ से बदलने की इस्तिता़अ़त (या'नी क़ुव्वत) न रखे उसे चाहिये कि अपनी ज़बान से बदल दे और जो अपनी ज़बान से बदलने की भी इस्तिता़अ़त न रखे उसे चाहिये कि अपने दिल में बुरा जाने और

1 ..... معجم کبیر، بقیۃ المیم من اسمہ معاذ، عطاء بن یسار عن معاذ بن جبل، ۲۰/ ۱۵۹، حدیث: ۳۳۱

www.dawateislami.net

येह ईमान का सब से कमज़ोर द-रजा है।[1]

फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मश्हूरो मा'रूफ़ किताब **आ़लमगीरी** में है : अम्र बिल मा'रूफ़ की कई सूरतें हैं : (1) अगर ग़ालिब गुमान येह है कि उन से कहेगा तो वोह उस की बात मान लेंगे और बुरी बात से बाज़ आ जाएंगे तो अम्र बिल मा'रूफ़ (नेकी का हुक्म करना) वाजिब है उस को बाज़ रहना जाइज़ नहीं। (2) अगर गुमान ग़ालिब येह है कि वोह त़रह़ त़रह़ की तोहमत बांधेंगे और गालियां देंगे तो (अम्र बिल मा'रूफ़) का तर्क करना अफ़्ज़ल है। (3) अगर येह मा'लूम है कि वोह उसे मारेंगे और येह सब्र न कर सकेगा या इस की वज्ह से फ़ितना व फ़साद पैदा होगा आपस में लड़ाई ठन जाएगी तो जब भी (अम्र बिल मा'रूफ़) छोड़ना अफ़्ज़ल है। (4) अगर मा'लूम हो कि वोह इसे मारेंगे तो सब्र कर लेगा और किसी के आगे शिकायत नहीं करेगा तो उन लोगों को बुरे काम से मन्अ़ करे और येह शख़्स मुजाहिद है। (5) अगर मा'लूम हो कि वोह मानेंगे नहीं मगर न मारेंगे और न गालियां देंगे तो उसे इख़्तियार है और अफ़्ज़ल येह है कि अम्र करे। (6) अगर अन्देशा है कि उन लोगों को अम्र बिल मा'रूफ़ करेगा तो क़त्ल कर डालेंगे और येह जानते हुए इस ने किया और उन लोगों ने मार ही डाला तो येह शहीद हुवा।[2]

अगर कोई समझाने के बा वुजूद नहीं मानता तो उसे अपने ह़ाल पर छोड़ दीजिये, उस की पोशीदा बुराई का चरचा न कीजिये

1 ...... مُسلِم، کتاب الایمان، باب بیان کون النهی عن المنکر...الخ، ص ۴۴، حدیث:۴۹

2 ...... فتاویٰ ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب السابع عشر...الخ، ۵/۳۵۲-۳۵۳

www.dawateislami.net

कि बुरी बात का चरचा करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पसन्द नहीं फ़रमाता चुनान्चे पारह 6 **सू-रतुन्निसाअ** की आयत नम्बर 148 में इर्शादे रब्बुल इबाद है :

لَا یُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ سَمِیْعًا عَلِیْمًا ﴿۱۴۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह पसन्द नहीं करता बुरी बात का ए'लान करना मगर मज़्लूम से और **अल्लाह** सुनता जानता है।

इस आयते करीमा के तहूत **तफ़्सीरे ख़ाज़िन** में है : उ़-लमा फ़रमाते हैं : लोगों के पोशीदा अह़वाल का ज़ाहिर करना जाइज़ नहीं क्यूं कि येह लोगों के उस शख़्स की ग़ीबत में और ख़ुद उस शख़्स की तोहमत में मुब्तला होने का सबब है लेकिन मज़्लूम के लिये जाइज़ है कि वोह ज़ालिम के ज़ुल्म को बयान करे पस वोह चोर या ग़ासिब के बारे में येह कह सकता है कि इस ने मेरा माल चुराया या ग़स्ब किया वग़ैरा।[1] अलबत्ता बा'ज़ उ़यूब ऐसे होते हैं जिन का बयान करना जाइज़ होता है जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअ़त" जिल्द सिवुम सफ़ह़ा 178 पर है : ह़दीस के रावियों और मुक़द्दमे (CASE) के गवाहों और मुसन्निफ़ीन पर जर्ह़ करना और उन के उ़यूब बयान करना जाइज़ है अगर रावियों की ख़राबियां बयान न की जाएं तो ह़दीसे सह़ीह़ और ग़ैरे सह़ीह़ में इम्तियाज़ न हो

مدینہ

1 تفسیر خازن، پ۶، النساء، تحت الآیۃ:۱۴۸، ۱/۴۴۴

www.dawateislami.net

सकेगा। इसी त़रह़ मुसन्निफ़ीन के ह़ालात न बयान किये जाएं तो कुतुबे मोअ्-त-मदा व ग़ैरे मोअ्-त-मदा (या'नी क़ाबिले ए'तिमाद व ना क़ाबिले ए'तिमाद किताबों) में फ़र्क़ न रहेगा। गवाहों पर जर्ह़ न की जाए तो ह़ुक़ूक़े मुस्लिमीन की निगह्दाश्त (देखभाल) न हो सकेगी।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दूसरों की ऐ़बपोशी करते हुए अपने ऐ़बों पर नज़र रखनी चाहिये। जब कभी दूसरे के ऐ़ब बयान करने को जी चाहे उस वक़्त अपने उ़यूब की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर उन्हें दूर करने में लग जाना चाहिये कि येह बहुत बड़ी सआ़दत मन्दी है। सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : उस शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है जिसे उस के उ़यूब ने लोगों की ऐ़बजूई से फैर दिया।[1] ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का फ़रमान है : जब तू किसी के उ़यूब बयान करने का इरादा करे तो अपने ऐ़बों को याद कर लिया कर।[2]

न थी ह़ाल की जब हमें अपने ख़बर — रहे देखते औरों के ऐ़बो हुनर
पड़ी अपनी बुराइयों पे जो नज़र — तो निगाह में कोई बुरा न रहा

◆ ◆ ◆ ◆ ◆

1 ...... فِرْدوسُ الْاَخبار، باب الطاء، ۲/۴۶، حدیث: ۳۷۴۲

2 ...... موسوعة ابنِ اَبِی الدُّنْیا، کتاب العقوبات، باب الغیبة وذمها، ۴/ ۳۵۷، رقم: ۵۶

www.dawateislami.net

ماخذ و مراجع

مطبوعہ	نام کتاب	مطبوعہ	نام کتاب
❋ ❋ ❋	❋ ❋ ❋	❋ ❋ ❋	قرآنِ پاک
مطبوعہ	نام کتاب	مطبوعہ	نام کتاب
دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ	سنن الترمذی	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۲ھ	کنز الایمان
دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ	سنن ابی داود	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۲ھ	خزائن العرفان
دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ	سنن ابنِ ماجہ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ	تفسیرِ قرطبی
دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ	سنن النسائی	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۶ھ	تفسیر غرائب القرآن
دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ	مسندِ امام احمد	المطبعۃ المیمنیہ مصر ۱۳۱۷ھ	تفسیرِ خازن
دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۵ھ	جامع صغیر	کوئٹہ ۱۴۱۹ھ	روح البیان
دار المعرفہ بیروت ۱۴۱۸ھ	المستدرک	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۱ھ	تفسیرِ نسفی
دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ	کنز العمال	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ	صحیح البخاری
دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ	المعجم الکبیر	دار ابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ	صحیح مسلم
دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ	رد المحتار	دار الفکر بیروت	فردوس الاخبار
رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیا لاہور	فتاویٰ رضویہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۸ھ	الترغیب والترھیب
دار صادر بیروت ۲۰۰۰ء	احیاء علوم الدین	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ	شعب الایمان
دار الکتب العلمیہ بیروت	مکاشفۃ القلوب	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۰ھ	المعجم الاوسط
دار المعرفہ بیروت ۱۴۱۹ھ	الزواجر عن اقتراف الکبائر	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ	المصنف لعبد الرزاق

www.dawateislami.net

مشکوٰۃ المصابیح	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ	قوت القلوب	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ
النھایۃ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۲۰۱۱ء	الحدیقۃ الندیۃ	پشاور
مرقاۃ المفاتیح	دار الکتب العلمیہ بیروت	سیر اعلام النبلاء	دار الفکر بیروت ۱۴۱۷ھ
الجامع لاخلاق الراوی	مکتبہ دار ابن جوزی ۱۴۳۳ھ	بستان المحدثین	باب المدینہ کراچی
فیض القدیر	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ	ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۴ھ
اشعۃ اللمعات	کوئٹہ	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
نزھۃ القاری	فرید بک اسٹال مرکز الاولیا لاہور	تنبیہ الغافلین	پشاور ۱۴۲۰ھ
القول البدیع	مؤسسۃ الریّان بیروت ۱۴۲۲ھ	فضائلِ دُعا	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مراٰۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور	موسوعہ ابن ابی الدنیا	المکتبۃ العصریہ بیروت
تاریخ بغداد	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ	روض الریاحین	دار الکتب العلمیہ بیروت
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ	تنبیہ المغترین	دار البشائر
الفتاوی الھندیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۰۳ھ	* * *	* * *

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2	अ़लानिया इ़बादत अफ़्ज़ल है या पोशीदा ?	21
नेक आ'माल में रिज़ाए इलाही की निय्यत	5	पोशीदा अ़मल सत्तर गुना अफ़्ज़ल है	23
नेकियां छुपाने के बारे में आयाते करीमा	8	पोशीदा दुआ़ अफ़्ज़ल है या अ़लानिय्या ?	24
नेकियां छुपाने के बारे में अह़ादीसे मुबा-रका	11	नेकियों को छुपाने के लिये झूट बोलना कैसा ?	26
सब से ज़ियादा त़ाक़त वर चीज़	12	अपने नाम के साथ अल्क़ाबात लगाना	27
नेकियां छुपाने के ह़वाले से अस्लाफ़के वाक़िआ़त	12	अपने "सय्यिद" होने का इज़्हार करना कैसा ?	29
सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पोशीदा अ़मल	13	इमाम, मुअज़्ज़िन और ख़त़ीब रियाकारी से कैसे बचें ?	31
जब तक ज़िन्दा रहे नेक अ़मल पोशीदा रहा	15	नफ़्ली रोज़ा और स-दक़ा व ख़ैरात का पोशीदा रखना	34
बन्द कमरे में छुप कर इ़बादत	16	रोज़े और स-दक़े व ख़ैरात पोशीदा रखने के वाक़िआ़त	37
"नेकी कर दरिया में डाल" का मत़लब	17	पोशीदा स-दक़ा व ख़ैरात करने का जज़्बा	38
नेकियां छुपाने का मक़्सद	19		

www.dawateislami.net

मेरा नाम किसी पर ज़ाहिर न फ़रमाएं	38	लिबासे शोहरत से मुराद	58
नमाज़ी और ह़ाजी नेकियां कैसे छुपाएं ?	40	कलफ़-दार लिबास का इस्ति'माल	59
अपने मुंह मियां मिठ्ठू बनने से क्या फ़ाएदा !	42	ख़ुश्बू लगाने में अच्छी निय्यत की सूरत	61
		ख़ुश्बू लगाने की निय्यतें	61
नमक की ख़ातिर दो ह़ज का सौदा	42	मुर्दार से भी ज़ियादा बदबूदार ख़ुश्बू	62
एक जुम्ले में दो ह़ज ज़ाएअ़	43	इस्लामी बहनों के लिये ख़ुश्बू लगाने का मस्अला	63
रियाकारी के ख़ौफ़ से नेक अ़मल तर्क करना कैसा ?	44	क़ुरबानी करने में रियाकारी से कैसे बचें ?	63
मुसन्निफ़ीन व शु-अ़रा का नाम व तख़ल्लुस इस्ति'माल करना	46	हुब्बे जाह व मन्सब की ख़ातिर नेकियों का इज़्हार	65
मुसन्निफ़ और ना'त ख़्वां रियाकारी से कैसे बचें ?	48	एक ह़र्फ़ का सवाब जाता रहा	67
इस्लाह़ करने का बेहतरीन त़रीक़ा	50	बुज़ुर्गाने दीन की शोहरत की वज्ह	69
अपने इ़ल्म, हुनर और फ़न को ज़ाहिर करना कैसा ?	52	ओ़हदा या मन्सब त़लब करना कैसा ?	71
		अ़मल ज़ाहिर होने पर ख़ुश होना	72
आ़लिम का अपना इ़ल्म ज़ाहिर करने की सूरतें	53	शोहरत के बा'द मैं ज़िन्दा रहना नहीं चाहता	75
डॉक्टर, सर्जन, इन्जीनियर और प्रोफ़ेसर	54	राज़ फ़ाश होने पर मौत की आरज़ू	76
		नेकियों के इज़्हार की जाइज़ सूरतें	77
सादा लिबास पहनने की फ़ज़ीलत	56	तह़्दीसे ने'मत के त़ौर पर इल्मो अ़मल का इज़्हार	78
लिबासे शोहरत बाइ़से ज़िल्लत	57		

www.dawateislami.net

दूसरों को सिखाने की निय्यत से नेक अ़मल का इज़्हार	78	झूटी ता'रीफ़ सुनने वालों के लिये वईदे शदीद	86
लोगों को बद गुमानी से बचाने के लिये अ़मल का इज़्हार	78	मुख़्लिस होने की अ़लामत	88
		दूसरों की नेकियां देख कर	
बुज़ुर्गों के सामने नेकियों का इज़्हार	79	क्या करना चाहिये ?	88
तरग़ीब या तह़्दीसे ने'मत के लिये नेकियों का इज़्हार	80	आ'माले बद को भी छुपाइये	89
		ख़ुफ़्या गुनाह की तौबा भी ख़ुफ़्या	92
नेकियों और ख़ूबियों के इज़्हार की चन्द मिसालें	81	किसी के गुनाह पर मुत्त़लअ़ हों तो क्या करें ?	93
अपनी ता'रीफ़ सुन कर क्या करना चाहिये ?	85	मआख़िज़ो मराजेअ़	97
		❋ ... ❋ ... ❋ ... ❋ ... ❋	

❋ ... ❋ ... ❋ ... ❋ ... ❋

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ा-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ात नम्बर नोट फ़रमा लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान

www.dawateislami.net

सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े इ़शा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना**" के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ " अपनी इस्लाह़ के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

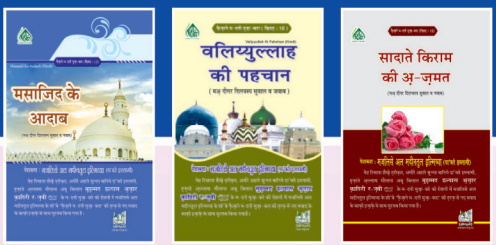

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net